सरल संस्कृत शिक्षा

(भाग-1)

-लेखक-
मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 412
ISBN 978-93-84003-00-5

सरल संस्कृत शिक्षा

(भाग-1)

-लेखक -
मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष
(अमृत महोत्सव-2013-2014) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

थम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
100 प्रतियाँ	फाल्गुन कृ. चतुर्दशी, 28 फरवरी 2014	16/-रु.
	भगवान वासुपूज्य जन्मजयंती	

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

प्रवेशिका कोर्स – व्याकरण विषय की पाठ्यक्रम पुस्तक
गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

Scanned by CamScanner

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान–संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही है।

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत है।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism.com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

Scanned by CamScanner

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र

-जीवन प्रकाश जैन, समन्वयक

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि वर्तमान बीसवी-इक्कीसवीं शताब्दी की सर्व प्राचीन दीक्षित एवं ज्ञान के क्षेत्र में जिन्हें जैनधर्म का जीवन्त इन्साइक्लोपीडिया कहा जा सकता है, ऐसी परमपूज्य, 60 वर्षीय दीक्षित-जीवन की महातपस्विनी साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के नाम सतीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय-मुरादाबाद एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के संयुक्त तत्त्वावधान में **"गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र"** का शुभारंभ वर्ष-2013 से किया गया है।

इस शिक्षा केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य जैन श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के ज्ञान से अभिसिंचित करना एवं उन्हें समाज में लब्ध प्रतिष्ठित करने हेतु विशेष सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री के माध्यम से सम्मानित करना है। इस शिक्षा केन्द्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के कोर्स संचालित किये गये हैं, जिसे नियमावली के अनुसार सभी श्रावक-श्राविकाएँ ज्ञानाराधना के लिए ज्वाइन कर सकते हैं। पूज्य माताजी का यह मार्मिक चिंतन है कि जैनधर्म के बंधुओं को सांसारिक व लौकिक ज्ञान के साथ ही जैनधर्म का ज्ञान अवश्यरूप से होना चाहिए, क्योंकि जैनधर्म के सिद्धान्तों को जानकर ही हमारी आत्मा विशुद्धि को प्राप्त करती है एवं धर्म के ये संस्कार आगामी अनेक भवों तक प्रत्येक आत्मा का मोक्षमार्ग प्रशस्त करते हुए उन्हें संसार भ्रमण से दूर करने में सहयोगी बनते हैं।

"ज्ञानामृतं भोजनं" अर्थात् ज्ञानरूपी अमृत ही आत्मा का भोजन है, यही इस शिक्षा केन्द्र का मूल उद्देश्य है। पाठकगण इन परीक्षा कोर्स में अभिरुचि के साथ भाग लेकर जैनधर्म के "सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, साहित्य व विधिविधान" से संदर्भित ज्ञान को प्राप्त करते हुए प्रवेशिका/मध्यमा/विशारद/शास्त्री/आचार्य के सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री आदि प्राप्त करके जैनधर्म की महती प्रभावना के साथ अपनी यशकीर्ति को भी दिग्दिगंतव्यापी बनायें, ऐसी प्रेरणा है।

-संपर्क कार्यालय-

C/o दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.-01233-280184, मो.-09411025124

E-mail : onlineccjs@gmail.com, Website : www.jambudweep.org

Scanned by CamScanner

विषयानुक्रमणिका

अदादिगणी धातुएँ २७
अनुवाद की प्रणाली २०
अनुवाद सहायक नियम २३
२५, ३४, ४८, ५३
अव्ययवर्ग ५०
अस्मद् शब्द के रूप ४१
इकारान्तशब्द ५५
उकारान्तशब्द ५६
कारकों के लक्षण ११
कीटवर्ग २८
कृधातु के रूप ४५
क्रियाविशेषण शब्द ५१
क्रिया का लक्षण, भेद १६
क्रियावचनप्रयोग नियम १६
क्तप्रत्ययान्त शब्द ६२
गणना (गिनती) ६, ७
ग्राम्यपशुवर्ग २३
जलजन्तुवर्ग २६
जातिवर्ग १४, २६
ज्ञानशब्द के रूप ३२
ज्ञाधातु के रूप ४०
तुमुन्प्रत्ययान्तशब्द ६१
दाधातु के रूप ४०
दिवादिगणी धातुएँ ५१
देववर्ग २६
धातुप्रयोग के नियम १६
नपुँसकलिङ्ग अकारान्त शब्द ३२
पट्धातु के रूप १८
पक्षिवर्ग २८
पुरुषवर्ग १४
पुरुषप्रयोग नियम १६
पुलिङ्ग अकारान्त शब्द २६
भ्वादिगणी धातुएँ १६, २५
बालशब्द के रूप १०
बालकों के सुन्दर नाम १५
बालिकाओं के सुन्दर नाम ३८
लताशब्द के रूप ३८
लिङ्गबोध की विधि १३
वन्यपशुवर्ग २८
विशेष्यविशेषण २३
विशेषणात्मकशब्द २३
विभक्तियों के लक्षण ११
शब्दवचनप्रयोगविधि १४
सखिशब्द के रूप ५६
सन्नन्त आकारान्त शब्द ३८
समयवाचक शब्द ५८
सर्वादिगणीय पु०शब्द ४०
सर्वादिगणीय स्त्री०शब्द ४०
सुभाषितदशक ६४
स्त्रीलिङ्ग आकारान्त शब्द २६

Scanned by CamScanner

संस्कृते गणना

एकम्—एक	...	१	अष्टाविंशतिः—अट्ठाइस	...	२८
द्वे—दो	...	२	ऊनत्रिंशत्—उनतीस	...	२९
त्रीणि—तीन	...	३	त्रिंशत्—तीस	...	३०
चत्वारि—चार	...	४	एकत्रिंशत्—इकतीस	...	३१
पञ्च—पांच	...	५	द्वात्रिंशत्—बत्तीस	...	३२
षट्—छह	...	६	त्रयस्त्रिंशत्—तेतीस	...	३३
सप्त—सात	...	७	चतुस्त्रिंशत्—चौंतीस	...	३४
अष्ट – आठ	...	८	पञ्चत्रिंशत्—पैंतीस	...	३५
नव—नौ	...	९	षट्त्रिंशत्—छत्तीस	...	३६
दश—दश	...	१०	सप्तत्रिंशत्—सैंतीस	...	३७
एकादश—ग्यारह	...	११	अष्टत्रिंशत्—अड़तीस	...	३८
द्वादश—बारह	...	१२	ऊनचत्वारिंशत्—उनतालीस		३९
त्रयोदश—तेरह	...	१३	चत्वारिंशत्—चालीस	...	४०
चतुर्दश—चौदह	...	१४	एकचत्वारिंशत्—इकतालीस		४१
पञ्चदश—पन्द्रह	...	१५	द्विचत्वारिंशत्—वियालीस		४२
षोडश—सोलह	...	१६	त्रिचत्वारिंशत्—तैंतालीस		४३
सप्तदश—सत्रह	...	१७	चतुश्चत्वारिंशत्—चौवालीस		४४
अष्टादश—अठारह	...	१८	पञ्चचत्वारिंशत्—पैंतालीस		४५
ऊनविंशतिः—उन्नीस	...	१९	षट्चत्वारिंशत्—छियालीस		४६
विंशतिः—बीस	...	२०	सप्तचत्वारिंशत्—सैंतालीस		४७
एकविंशतिः—इक्कीस	...	२१	अष्टचत्वारिंशत्—अड़तालीस		४८
द्वाविंशतिः—बाईस	....	२२	ऊनपञ्चाशत्—उनचास	...	४९
त्रयोविंशतिः—तेईस	...	२३	पञ्चाशत्—पचास	...	५०
चतुर्विंशतिः—चौबीस	...	२४	एकपञ्चाशत्—इक्यावन		५१
पञ्चविंशतिः—पच्चीस	...	२५	द्विपञ्चाशत्—बावन	...	५२
षड्विंशतिः—छब्बीस	...	२६	त्रिपञ्चाशत्—तिरेपन	...	५३
सप्तविंशतिः—सत्ताइस	...	२७	चतुःपञ्चाशत्—चौअन	...	५४

Scanned by CamScanner

पञ्चपञ्चाशत्—पचपन	...	५५	अशीतिः—अस्सी	...	८०
षट्पञ्चाशत्—छप्पन	...	५६	एकाशीतिः—इक्यासी	...	८१
सप्तपञ्चाशत्—सत्तावन	...	५७	द्व्यशीतिः—बियासी	...	८२
अष्टपञ्चाशत्—अट्ठावन	...	५८	त्र्यशीतिः—तिरासी	...	८३
ऊनषष्टिः—उनसठ	...	५९	चतुरशीतिः—चौरासी	...	८४
षष्टिः—साठ	...	६०	पञ्चाशीतिः—पचासी	...	८५
एकषष्टिः—इकसठ	...	६१	षडशीतिः—छियासी	...	८६
द्विषष्टिः—बासठ	...	६२	सप्ताशीतिः—सतासी	...	८७
त्रिषष्टिः—तिरेसठ	...	६३	अष्टाशीतिः—अठासी	...	८८
चतुःषष्टिः—चौंसठ	...	६४	उननवतिः—नवासी	...	८९
पञ्चषष्टिः—पैंसठ	...	६५	नवतिः—नब्बे	...	९०
षट्षष्टिः—छियासठ	...	६६	एकनवतिः—इक्यानबे	...	९१
सप्तषष्टिः—सड़सठ	...	६७	द्विनवतिः—दानबे	...	९२
अष्टषष्टिः—अड़सठ	...	६८	त्रिणवतिः—तिरानवे	...	९३
उनसप्ततिः—उनहत्तर	...	६९	चतुर्णवतिः—चौरानबे	...	९४
सप्ततिः—सत्तर	...	७०	पञ्चनवतिः—पंचानबै	...	९५
एकसप्ततिः—इकहत्तर	...	७१	षण्णवतिः—छियानबै	...	९६
द्विसप्ततिः—बहत्तर	...	७२	सप्तनवतिः—सत्तानबै	...	९७
त्रिसप्ततिः—तिहत्तर	...	७३	अष्टनवतिः—अट्ठानबै	...	९८
चतुःसप्ततिः—चुहत्तर	...	७४	ऊनशतम्—निन्यानबै	...	९९
पञ्चसप्ततिः—पचहत्तर	...	७५	शतम्—सौ	...	१००
षट्सप्ततिः—छिहत्तर	...	७६	सहस्रम्—हजार	...	१०००
सप्तसप्ततिः—सतहत्तर	...	७७	अयुतम् दशसहस्रम्—दशहजार		१०००००
अष्टसप्ततिः—अठहत्तर	...	७८	लक्षम्—लाख		दश लाख
ऊनाशीतिः—उन्यासी	...	७९	दशलक्षम्—		

नोट-एकोनविंशति से नवनवति तकके शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। शतम् आदि दशलाख पर्यन्त शब्द नित्य एकवचनान्त नपुंसक हैं।

Scanned by CamScanner

सरल संस्कृत शिक्षा

प्रथम–भाग

प्रणम्य परमात्मानं, बालानां हितकारिकाम् ।
संक्षिप्तां सरलां भव्यों, कुर्वे संस्कृतशिक्षिकाम् ॥

प्रथमः पाठः

विभक्तियों के नाम व अर्थ

विभक्तियां	कारक	अर्थ
प्रथमा	कर्त्ता	कर्त्ता, ने,
द्वितीया	कर्म	को,
तृतीया	करण	ने, से, के द्वारा, कारण से,
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिये, के अर्थ, के वास्ते,
पंचमी	अपादान	से, कारण, अपेक्षा,
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के,
सप्तमी	अधिकरण	में, पर,
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, भो, रे, अरे, अये,

Scanned by CamScanner

अकारान्त पुल्लिङ्ग बालशब्द के रूप

प्रथमा	बालः	=	लड़का,
	बालौ	=	दो लड़के,
	बालाः	=	सब लड़के,
द्वितीया	बालम्	=	लड़के को,
	बालौ	=	दो लड़कों को,
	बालान्	=	सब लड़कों को,
तृतीया	बालेन	=	लड़के ने, से, के द्वारा,
	बालाभ्याम्	=	दो लड़कों ने, से, के द्वारा,
	बालैः	=	सब लड़कों ने, से, के द्वारा,
चतुर्थी	बालाय	=	लड़के के लिये, अर्थ, वास्ते,
	बालाभ्याम्	=	दो लड़कों के लिये, अर्थ, वास्ते,
	बालेभ्यः	=	सब लड़कों के लिये, अर्थ, वास्ते,
पञ्चमी	बालात्	=	लड़के से,
	बालाभ्याम्	=	दो लड़कों से,
	बालेभ्यः	=	सब लड़कों से,
षष्ठी	बालस्य	=	लड़के का, की, के,
	बालयोः	=	दो लड़कों का, की, के,
	बालानाम्	=	सब लड़कों का, की, के,
सप्तमी	बाले	=	लड़के में, लड़का पर,
	बालयोः	=	दो लड़कों में, पर,
	बालेषु	=	सब लड़कों में, पर,
सम्बोधन	हे बाल	=	हे लड़का, भो, अरे लड़का,
	हे बालौ	=	हे दो लड़को, भो, अरे दो लड़को,
	हे बालाः	=	हे सब लड़को, अरे सब लड़को,

Scanned by CamScanner

कुछ शब्दों की तृतीया विभक्ति के एकवचन और षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में न को ण हो जाता है। ऐसे शब्दों में न के पूर्व ऋ, र और ष में से कोई अक्षर अवश्य होना चाहिए। और ऋकारादिक से न के बीच चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, ल्, श् और सकार नहीं होना चाहिये। जैसे—नृणेण, रामेण, शिष्येण, शत्रुणा, वैरिणा, रामाणाम्, शिष्याणाम्, मातॄणाम् और वृषाणाम् आदि।

नपुँसक लिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में भी यह नियम प्रवृत्त होता है। जैसे—गृहाणि, वारीणि इत्यादि।

कारकों के लक्षण

कर्त्ता—क्रिया के करने वाले को 'कर्त्ता' कहते हैं। कर्त्ता के अर्थ में प्रथमाविभक्ति होती है। जैसे—रमेशः पठति (रमेश पढ़ता है) इस वाक्य में 'पढ़ना' क्रिया है। इस क्रिया का करने वाला रमेश 'कर्त्ता' हुआ। इसलिए रमेश शब्द से प्रथमा विभक्ति 'रमेशः' हुई।

कर्म—जिसके ऊपर क्रिया का असर पड़ता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—रमेशः चित्रं पश्यति (रमेश चित्र को देखता है) इस वाक्य में 'देखना' क्रिया का असर चित्र पर पड़ा। इसलिए 'चित्र' कर्मकारक हुआ और उससे द्वितीयाविभक्ति 'चित्रम्' हुई।

करण—जिसकी मदद (सहायता) से कर्त्ता अपना काम पूरा करता है उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीयाविभक्ति होती है। जैसे—रमेशः बाणेन हन्ति (रमेश बाण से मारता है) इस वाक्य में रमेश बाण की मदद से मारने का काम पूरा करता है, इसलिए बाण करण कारक हुआ और उससे तृतीया विभक्ति 'बाणेन' हुई।

सम्प्रदान—जिसके लिये कोई कार्य किया जाता है अथवा जिसके लिये देय वस्तु दी जाती है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान

Scanned by CamScanner

कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—रमेशः विप्राय दक्षिणां ददाति (रमेश विप्र को दक्षिणा देता है)। इस वाक्य में विप्र को दक्षिणा दी जाती है इसलिए वह सम्प्रदान कारक हुआ और उससे चतुर्थी विभक्ति 'विप्राय' हुई।

अपादान—जिससे कोई चीज अलग होती है उसे अपादानकारक कहते हैं। अपादानकारक में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—वृक्षात् फलं पतति (वृक्ष से फल गिरता है)। इस वाक्य में फल वृक्ष से अलग होता है इसलिये वृक्ष अपादानकारक हुआ और उससे पंचमी विभक्ति 'वृक्षात्' हुई।

सम्बन्ध—दो या दो से अधिक वस्तुओं में सम्बन्ध दिखलाने के लिये षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे—रमेशस्य जनकः (रमेश का पिता)। इस वाक्य में रमेश और पिता इन दोनों में सम्बन्ध है। इसलिये 'रमेश' शब्द से षष्ठी विभक्ति 'रमेशस्य' हुई।

अधिकरण—कर्त्ता और कर्म की क्रिया के आधार (स्थान) को अधिकरण कहते हैं। अधिकरणकारक में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—रमेशः कटे आस्ते (रमेश चटाई पर बैठा है)। इस वाक्य में बैठने रूप क्रिया का काम चटाई पर हो रहा है। इसलिए चटाई अधिकरणकारक हुआ और उससे सप्तमी विभक्ति 'कटे' हुई। इसी प्रकार रमेशः स्थाल्याम् ओदनं पचति (रमेश बटलोई में भात पकाता है) इत्यादि में भी समझना चाहिये।

सम्बोधन—किसी को पुकार कर अपनी ओर आकृष्ट करने को सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हे रमेश अधुना पठ (हे रमेश अब पढ़)। इस वाक्य में रमेश कार्यान्तर में प्रवृत्त था। उसे पुकार कर अपने सन्मुख करके पढ़ने में प्रवृत्त कराया गया, इसलिये रमेश सम्बोधन हुआ और उससे प्रथमा

Scanned by CamScanner

विभक्ति 'रमेश' हुई। सम्बोधन वाचक शब्द के पूर्व में हे, भो, अरे, रे और अये आदि चिह्न लगाये जाते हैं।

लिङ्गबोध की विधि

जिस शब्द से पुरुषजाति का बोध होता है, वह शब्द पुल्लिङ्ग होता है। जैसे—बालः, शिवः, देवः, अश्वः, हरिः, शिशुः इत्यादि। इन शब्दों से पुरुषजाति का बोध होता है, इसलिये ये पुल्लिङ्ग हैं।

जिस शब्द से स्त्रीजाति का बोध होता है, यह शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। जैसे—बाला, अजा, सुरभिः, धेनुः, वधूः आदि। इन शब्दों से स्त्रीजाति का बोध होता है, इसलिये ये स्त्रीलिङ्ग हैं।

जिस शब्द से पुरुष और स्त्री जाति का बोध नहीं होता, वह शब्द नपुँसक लिङ्ग होता है। जैसे—ज्ञान, वन, पुस्तक, वारि और मधु आदि। इन शब्दो से पुरुष और स्त्री दोनों जातियों का बोध नहीं होता, इसलिये ये नपुँसक लिङ्ग हैं।

नोट—इन लिङ्गबोधक नियमों में कई जगह परिवर्तन भी हो जाता है, जिसका यथार्थ निर्णय कोश और व्याकरण के ग्रन्थों से ही होता है।

शब्दों के वचनप्रयोग का नियम

वस्तु यदि एक हो तो एकवचन का, दो हों तो द्विवचन का और तीन या तीन से अधिक हों तो बहुवचन का प्रयोग होता है।

रामशब्द की समस्त विभक्तियों का एक पद्यमें प्रदर्शन

रामो राजमणिः, सदा विजयते, रामं रमेशं भजे।
रामेणाभिहता, निशाचरचमूः, रामाय तस्मै नमः॥
रामान्नास्ति, परायणं परतरं, रामस्य दासोऽस्म्यहं।
रामे चित्तलयं, सदा भवतु मे, भो राम! मामुद्धर॥

Scanned by CamScanner

द्वितीयः पाठः

पुरुष-वर्ग

अग्रजः = बड़ाभाई, अनुजः = छोटाभाई, ईश्वरः; जगदीशः = परमात्मा, जनकः = पिता, जारः = यार, देवरः = देवर, दौहित्रः = लड़की का लड़का, नरः = मनुष्य, पाचकः = रसोइया, पितामहः = दादा या बाबा, पितृव्यः = चाचा, पुत्रः = लड़का, पूर्वजः = जेठा, पौत्रः = नाती या पोता, प्रपितामहः = आजाका पिता, प्रपौत्रः = पन्ती या पड़पोता, बान्धवः = भाई या सम्बन्धी, भागिनेयः = भानजा, भृत्यः = नौकर, भ्रातृव्यः = भतीजा, मातामहः = नाना, मातुलः = मामा, मातुलेयः = ममेरा भाई, मानवः = मनुष्य, वयस्यः = मित्र, वंशः = कुटुम्ब, श्यालः = साला, श्यालोढः = साढू, श्वसुरः = ससुर, सुतः = पुत्र, सोदरः = सगा भाई।

जातिवर्ग प्रथमस्तम्भ

कायस्थः = कायस्थ, कुलालः = कुम्हार, कृषकः = किसान, कंसकारः = कसेरा, क्षत्रियः = क्षत्रिय, गोण्डः = गोंड, गोपः = अहीर या ग्वाल, गौराङ्गः = अंग्रेज, चर्मकारः = चमार, चारणः = भाट, चित्रकारः = चतेरा या पेन्टर, जैनः = जैन, तक्षकः = बढ़ई, तन्तुवायः = जुलाहा, ताम्रकारः = तमेरा, तैलिकः = तेली, देवः = देव, धीवरः = ढीमर, नटः = नट।

नापितः = नाई, नृपः = राजा, भण्डः = भांड़, मालाकारः = माली, मांसिकः = खटीक, यवनः = मुसलमान, यायावरः = कंजर, रजकः = धोबी, रंजकः = रंगरेज, राक्षसः = राक्षस, लोहकारः = लुहार, वधिकः = कसाई, विप्रः = ब्राह्मण, वैश्यः = वैश्य, व्याधः = भील, शूद्रः = शूद्र, शौण्डिकः = कलार, षण्डः = नपुंसक, सिक्खः = सिक्ख, सुवर्णकारः = सुनार, सौचिकः = दर्जी।

Scanned by CamScanner

वृक्ष-वर्ग

अपामार्गः = अहाझारा, अशोकः = अशोक, अर्कः = अकौवा, आम्रः = आम, उदुम्बरः = ऊमर, एरण्डः = अंडा, कतकः = निर्मली, कदम्बः = कदम, कनकः = धतूरा, कपित्थः = कैंथा, करञ्जः = कंजी, कार्पासः = कपास, काशः = कांस, किंशुकः = ढाक, कुशः = डाभ, केतकः = केवड़ा; केतकी, खदिरः = खैर।

घासः = घास, चम्पकः = चम्पा, तिलकः = तिलक, धवः = धौ, निम्बः = नीम, पनसः = कटहर, पलाशः = छिवला, पिप्पलः = पीपल, पुष्पराजः = गुलाब, प्लक्षः = पाकर, फेनिलः = रीठा, बकुलः = मौलसिरी, बब्बूलः = बँबूल, भूर्जः = भोज, वटः = बड़, बिल्वः = बेल, वृक्षः = पेड़, वेतसः = बेंत, वंशः = बांस, सर्जः = सागौन।

बालकों के सुन्दर नाम

अजितः, अशोकः, इन्द्रः, केशवः, कैलाशः, जगदीशः, जयः, जिनेशः, दिनेशः, देवः, देवेन्द्रः, नरेन्द्रः, मदनः, महावीरः, महेन्द्रः, रमेशः, राजेन्द्रः, विमलः, वीरेन्द्रः, शिवः, श्रीचन्द्रः, सुभाषः, सुरेशः, सुरेन्द्रः।

नोट—इन चारों स्तम्भों के शब्द पुल्लिङ्ग हैं। इनके रूप बाल शब्द के समान चलते हैं। वृक्षवाचक शब्दों को नपुंसकलिङ्ग कर देने से वे फलवाचक हो जाते हैं और उनके रूप आगे कहे गये ज्ञानशब्द के समान चलते हैं।

क्रिया का लक्षण वा भेद

कर्त्ता के व्यापार को क्रिया कहते हैं। क्रिया के दो भेद हैं। सकर्मक और अकर्मक। जिस क्रिया में व्यापार वा फल अलग-अलग रहते हैं उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—बालः पुस्तकं पश्यति

Scanned by CamScanner

(बालक पुस्तक को देखता है)। इस वाक्य में पश्यति क्रिया का व्यापार बालक में है और फल पुस्तक में हैं, इससे यह क्रिया सकर्मक हुई।

जिस क्रिया का व्यापार वा फल एक ही में रहते हैं उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—छात्रः हसति (छात्र हँसता है)। इस वाक्य में हँसने का काम और हँसना दोनों एक ही छात्र में रहते हैं, इससे यह हसति क्रिया अकर्मक हुई।

दर्शन, पठन, भोजन, गमन, बन्धन, चिन्तन, विमोचन और पूजन अर्थ वाली धातुएँ सकर्मक तथा बढ़ना, क्षय, भय, जीना, मरना, लज्जा, होना, ठहरना, जागना, सोना, खेलना और दीप्ति अर्थ वाली धातुएँ अकर्मक होती हैं। तदुक्तम्—

वृद्धिक्षयभयजीवितमरणं, लज्जासत्तास्थितिजागरणम्।
शयन-क्रीडा-रुचिदीप्त्यर्थं, धातुगणं तमकर्मकमाहुः॥

धातुओं के पदों के प्रयोग के नियम

किसी धातु का प्रयोग परस्मैपद में, किसी धातु का प्रयोग आत्मनेपद में तथा किसी धातु का प्रयोग उभयपद में होता है।

जिस धातु का प्रयोग उभयपद में होता है वहाँ जिस क्रिया का फल अपने लिये मिलता है, उस क्रिया का प्रयोग आत्मनेपद में होता है। जैसे—विप्रः भोजनं पचते (ब्राह्मण भोजन पकाता है)। यहाँ उभयपदी पच्धातु का प्रयोग आत्मनेपद में हुआ है। क्योंकि ब्राह्मण अपने लिये भोजन पकाता है। पचक्रिया का फल ब्राह्मण के लिये मिलेगा।

जिस क्रिया का फल दूसरे के लिये मिलता है उस क्रिया का प्रयोग परस्मैपद में होता है। जैसे—पाचकः भोजनं पचति (रसोइया भोजन पकाता है) यहाँ उभयपदी पच्धातु का प्रयोग परस्मैपद में हुआ है। क्योंकि यहाँ रसोइया भोजन दूसरे के लिये पकाता है। पचक्रिया का फल कर्त्ता रसोइया से भिन्न उसके स्वामी के लिये मिलेगा।

Scanned by CamScanner

पुरुषों के बोध वा प्रयोग के नियम

जहाँ कर्त्ता के रूप में अस्मद् शब्द के मैं या हम शब्द का प्रयोग होता है वहाँ क्रियावाची धातु का प्रयोग उत्तमपुरुष में होता है। जैसे—अहम् पठामि (मैं पढ़ता हूँ)। इत्यादि।

जहाँ कर्त्ता के रूप में युष्मद् शब्द के तूँ या तुम शब्द का प्रयोग होता है वहाँ क्रियावाची धातु का प्रयोग मध्यम पुरुष में होता है। जैसे—त्वं पठसि (तुम पढ़ते हो)। इत्यादि।

जहाँ कर्त्ता के रूप में इन दोनों से भिन्न का प्रयोग होता है वहाँ क्रियावाची धातु का प्रयोग अन्य या प्रथम पुरुष में होता है। जैसे—सः पठति (वह पढ़ता है) रमेशः पठति और भवान् पठति। इत्यादि।

क्रिया के वचन के प्रयोग के नियम

वाक्य में कर्त्ता रूप से अस्मद् शब्द के एकवचन का प्रयोग होने पर धातु से उत्तमपुरुष के एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे—अहं पठामि (मैं पढ़ता हूँ)।

वाक्य में कर्त्ता के रूप में अस्मद् शब्द के द्विवचन का प्रयोग होने पर धातु से उत्तमपुरुष के द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे—आवाम् पठावः (हम दोनों पढ़ते हैं)।

वाक्य में कर्त्ता के रूप में अस्मद् शब्द के बहुवचन का प्रयोग होने पर धातु से उत्तमपुरुष के बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे—वयम् पठामः (हम सब पढ़ते हैं)।

इसी प्रकार मध्यम और प्रथम पुरुष के वचनों के प्रयोग के विषय में भी जानना चाहिये।

Scanned by CamScanner

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सः = वह,	तौ = वे दोनों,	ते = वे सब,
भवान् = आप,	भवन्तौ = आप दोनों,	भवन्तः = आप सब,
त्वम् = तू,	युवाम् = तुम दोनों,	यूयम् = तुम सब
अहम् = मैं,	आवाम् = हम दोनों,	वयम् = हम सब

लट्लकार—लट्लकार का प्रयोग वर्तमान समय में होने वाली क्रिया के विषय में किया जाता है। जैसे—रमेशः शालां गच्छति (रमेश स्कूल को जाता है) इत्यादि।

पठ् (पढ़ना) धातु का लट्लकार

सः	पठति	वह पढ़ता है,
तौ	पठतः	वे दोनों पढ़ते हैं,
ते	पठन्ति	वे सब पढ़ते हैं,
त्वम्	पठसि	तू पढ़ता है,
युवाम	पठथः	तुम दोनों पढ़ते हो,
यूयम्	पठथ	तुम सब पढ़ते हो,
अहम्	पठामि	मैं पढ़ता हूँ,
आवाम	पठावः	हम दोनों पढ़ते हैं,
वयम	पठामः	हम सब पढ़ते हैं।

नोटः—ति, तः, अन्ति। सि थः, थ। मि वः, मः। ये नौ धातुओं की विभक्तियाँ हैं। इन्हें लगाकर नीचे लिखे धातुओं के रू भी पठति आदि के समान चलाना चाहिये।

Scanned by CamScanner

भ्वादिगणी परस्मैपदी क्रियाएँ

अर्चति	= पूजता है,	जयति	= जीतता है,
अर्हति	= समर्थ है,	जिघ्रति	= सूँघता है,
अवति	= रक्षा करता है,	जीवति	= जीता है,
क्रामति	= घूमता है,	तरति	= पार होता है,
क्राम्यति	= घूमता है,	तिष्ठति	= ठहरता है,
क्रीडति	= खेलता है,	त्यजति	= छोड़ता है,
खनति	= खोदता है,	दशति	= काटता है,
खादति	= खाता है,	दहति	= जलाता है,
खेलति	= खेलता है,	धरति	= पहुँचाता है,
गच्छति	= जाता है,	धावति	= दौड़ता है,
गायति	= गाता है,	नन्दति	= प्रसन्न होता है,
गोपायति	= रक्षा करता है,	नमति	= प्रणाम करता है,
घर्षति	= घिसता है,	नयति	= ले जाता है,
चलति	= चलता है,	निन्दति	= निन्दा करता है,
चर्वति	= चबाता है,	पचति	= पकाता है,
चूसति	= चूसता है,	पतति	= गिरता है,

अर्च् = पूजा, अर्ह् = सकना, अव् = रक्षा, क्रम् = घूमना, क्रीड् = खेलना, खन् = खोदना, खाद् = खाना, खेल् = खेलना, गम् = जाना, गै = गाना, गुप् = रक्षा करना, घर्ष् = घिसना, चल् = चलना, चर्व् = चबाना, चूस् = चूसना।

जि = जीतना, घ्रा = सूँघना, जीव् = जीना, तृ = पार होना, स्था = ठहरना, त्यज् = छोड़ना, दश् = डसना, दह् = जलाना, धृ = पहुँचाना, धाव् = दौड़ना, नन्द् = प्रसन्न होना, नम् = नमस्कार, नी = ले जाना, निन्द् = निन्दा, पच् = पकाना, पत् = गिरना।

Scanned by CamScanner

अनुवाद सहायक नियम प्रथमवर्ग

१—किसी भी धातु के लट्लकार के रूप के अन्त में 'स्म' अव्यय लगा देने से अनद्यतन या परोक्षभूत अर्थ हो जाता है। जैसे—पठति स्म (पढ़ता था)। सः गच्छति स्म (वह गया), भाषते स्म (कहता था या उसने कहा) इत्यादि।

२—गम् धातु के प्रयोग में जहाँ जाया जाता है तद्वाचक शब्द से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—ग्रामं गच्छति (गाँव के लिये जाता है) इत्यादि।

३—दुह् (दोहना), याच् (माँगना), पच् (पकाना), दण्ड् (सजा देना), रुध् (घेरना), प्रच्छ् (पूछना), चि (बटोरना), ब्रू (बोलना), शास् (शासन करना), जि (जीतना), मन्थ् (मथना), मुष् (चुराना), नी (ले जाना), हृ (चुराना), कृष् (खोदना), वह् (ले जाना) ये सोलह धातुएँ द्विकर्मक हैं। जैसे—मातुलः भृत्यं ग्रामं नयति। सः तण्डुलान् ओदनं पचति। विप्रं मार्गं प्रच्छति इत्यादि।

दुह्याच्पच्दण्डरुधिपृच्छि, चिब्रूशास्जिमथ्मुषाम्।
कर्मयुक्स्यादकथितं, तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्॥

अनुवाद की प्रणाली

संस्कृत के अनुवाद में कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है तथा क्रियापद कर्त्ता के अधीन होता है। अर्थात् यदि कर्त्ता प्रथमपुरुष का हो तो क्रिया भी प्रथमपुरुष की, यदि कर्त्ता मध्यमपुरुष का हो तो क्रिया मध्यमपुरुष की और यदि कर्त्ता उत्तमपुरुष का हो तो क्रिया भी उत्तमपुरुष की लगाई जाती है।

कर्त्ता के एकवचन के साथ क्रिया भी एकवचन की, द्विवचन के साथ द्विवचन की और बहुवचन के साथ क्रिया भी बहुवचन की ही लगाई जाती है।

Scanned by CamScanner

जैसे 'सः पुस्तकं पठति' इस वाक्य मे 'सः' कर्त्ता है जो कि प्रथमा विभक्ति में है। 'पुस्तकम्' कर्म है जो द्वितीयाविभक्ति में है। और क्योंकि 'सः' 'तत्' शब्द के प्रथमपुरुष का एकवचन है, इसलिए क्रिया 'पठति' भी प्रथमपुरुष के एकवचन में ही है। इसी प्रकार भवान् पठति और रमेशः पठति आदि में भी जानना।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

मानवाः विप्रमर्चन्ति। ते बालाः पठन्ति। गौराङ्गाः क्राम्यन्ति। नापितः घासाय खनति। नटाः खेलन्ति। भवान् गच्छति स्म। कृषकौ गायतः। ईश्वरः मानवान् गोपयति। यूयं निम्बं चर्वथ। जिनेशः सुरेशं जयति। नृपस्य पौत्रः जीवति। वयं बालान् त्यजामः। सः विप्रं नमति। तौ तक्षकौ अशोकं नयतः। पाचकः पचति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

हम सब पढ़ते हैं। आप दोनों, परमात्मा को पूजते हैं। क्षत्रिय रक्षा करते थे। माली काँश खोदता था। तुम सब, खाते हो। वे सब खेलते थे। वृक्ष पर दो ब्राह्मण गाते हैं। तुम सब मित्र को जीतते हो। वह ढीमर को छोड़ता है। बालक पिता को काटता था। मित्र दौड़ते हैं। बालक प्रसन्न होते हैं। तुम दोनों पिता को नमस्कार करते हो। सुन्हार नौकर को ले जाता है। वे दोनों रसोइया पकाते हैं।

Scanned by CamScanner

तृतीयः पाठः

जातिवर्ग द्वितीयस्तम्भ

अश्ववाहः = सवार, आपणिकः = दुकानदार, आरक्षकः = सिपाही, ऐन्द्रजालिकः = बाजीगर, कर्णधारः = पार लगाने वाला या खेवटिया, कर्मकरः = कर्मचारी, कान्दविकः = हलवाई, कार्पासिकः = धुनियाँ, गान्धिकः = गन्धी, ग्रामाधीशः = पटैल, घटकः = दलाल, घटिकाकारः = घड़ीसाज, चारकः = चरवाहा।

ताम्बूलिकः = तमौली, दान्तिकः = दाँत बनाने वाला, दायादः = वारिस, दूतः = दूत, दैवज्ञः = ज्योतिषी, निर्णायकः = पंच, दौवारिकः = द्वारपाल, द्यूतकारः = जुवारी, नष्टनिधिः = दिवालिया, नाविकः = मल्लाह, नागरिकः = नगर निवासी, पत्रवाहकः = हलकारा।

परिष्कारकः = मरम्मतकर्त्ता, पर्वतीयः = पहाड़ी, पारसीकः = पारस देशवासी, पुरोहितः = पुरोहित, बन्धकः = जिल्दसाज, बलयार्पकः = कचेरा, भर्जकः = भरभूँजा, भारकः = कुली; हमाल या बुझिया, भारतीयः = भारतवासी, मद्यपः = शराबी, माथुरः = मथुरावासी, मायिकः = मदारी, याज्ञिकः = यज्ञ कराने वाला, यूरुपीयः = यूरोपवासी, राजकीयः = सरकारी, राष्ट्रदूतः = राजदूत, राष्ट्रसचिवः = राजमंत्री, रोकपालः = रोकड़िया।

लेखहरः = सन्देशवाहक, लेखापालः = मुनीम, वन्यः = जंगली, वार्ताहरः = सम्वाददाता, वाहकः = गाड़ीवान, विषवैद्यः = सपेरा, वीवधिकः = फेरीवाला, वैदेशिकः = परदेशी, शस्त्रमार्जकः = शिकलीगिर, शाकहारः = कूँजरा, श्रमिकः = मजदूर, सम्विदाकारः = ठेकेदार, हलवाहः = हलवाहा। इन चारों स्तम्भों के रूप बाल शब्द के समान चलते हैं।

Scanned by CamScanner

विशेष्य और विशेषण

विशेषण—जो विशेष्य के गुण या विशेषता को बतलाता है उसे विशेषण कहते हैं। जैसे—कृष्णः (काला), शोभनम् (सुन्दर) और कोमला (कोमल) इत्यादि।

विशेष्य—विशेषण जिसकी विशेषता या गुण बतलाता है, उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे—कृष्णः अश्वः, नवं पुस्तकम्; युवतिः जाया इत्यादि। यहाँ अश्व, पुस्तक और जाया विशेष्य हैं। तथा कृष्ण, नव और युवति क्रमशः उनके विशेषण हैं।

जो लिङ्ग, जो वचन और जो विभक्ति विशेष्य की होती है, वही लिङ्ग, वही वचन और वही विभक्ति विशेषण की भी होती है। तदुक्तम्

यल्लिङ्गं यद्वचनं, या च विभक्तिर्विशेष्यस्य।
तल्लिङ्गं तद्वचनं, सैव विभक्तिर्विशेषणस्य॥

विशेषणात्मक शब्द

अदयः = निर्दय, अधमः = नीच, अध्यक्षः = मालिक, अनार्यः = दुर्जन, अन्धः = अन्धा, अमित्रः = शत्रु, अर्हः = प्रधान, अलसः = आलसी, अवशः = आजाद, आमः = कच्चा, आर्यः = सज्जन, ऋषभः = उत्तम, कदर्यः = दुष्ट स्वामी, कर्कशः = कठोर, कर्मठः = पुरुषार्थी, काणः = काना, कितवः = धूर्त, कृतघ्नः = कृतघ्न, कृपणः = कंजूस, कृशः = दुबला, क्रूरः = दुष्ट, क्षमः = समर्थ, खलः = दुष्ट, ग्रहिलः = दुराग्रही, ग्राहकः = ग्राहक, घनिष्टः = घनिष्ट, चण्डः = अतिक्रोधी, जाल्मः = अविचारी, चौरः = चोर।

तावकीनः = तेरा, तुष्टः = सन्तुष्ट, त्रस्तः = डरा हुआ, दक्षः = निपुण, दुश्चरित्रः = दुराचारी, दृढ़ः = टिकाऊ, दैनंदिनः =

Scanned by CamScanner

दैनिक, द्विगुणः = दुगुना, धनिकः = धनी, धन्यः = प्रशंसनीय, धृष्टः = ढीठ, नकारः = नहीं, नग्नः = नंगा, नम्रः = विनयी, नवः = नया, नायकः = पंच या मुखिया, निजः = अपना, निरोगः = स्वस्थ, निर्भरः = आश्रित, निःसंज्ञः = बेहोश, नृशंसः = क्रूर।

पक्षिलः = पक्षकार, पथिकः = राहगीर, पदगः = पैदल, पान्थः = राहगीर, पामरः = नीच, पांशुलः = पापी, पिशुनः = चुगल, पीवरः = मोटा, पुष्टः = मजबूत, पौरः = ग्रामवासी, प्रतारकः = ठग, प्रापकः = पाने वाला, प्रेषकः = भेजनेवाला, मुखरः = मुखिया, प्राज्ञः = बुद्धिमान्, भग्नः = फूटा, भटः = शूर, मत्तः = पागल, मल्लः = पहलवान, महर्घः = कीमती, मामकीनः = मेरा, मूकः = गूँगा, मूर्खः = मूर्ख।

रक्षकः = पालक, रसिकः = शौकीन, रुष्टः = नाराज, लोलुपः = लोभी, वक्रः = टेढ़ा, वञ्चकः = ठग, वधिरः = बहरा, वन्दनीयः = पूज्य, वरः = उत्तम, वराकः = दीन, वशंवदः = आज्ञाकारी, वाचाटः = बकवादी, वामनः = ठिगना, विवशः = पराधीन, विशदः = साफ, शिक्षितः = पढ़ा-लिखा, शिथिलः = सुस्त, शक्तः = समर्थ, सतीर्थ्यः = साथी, सदयः = दयालु, सैनिकः = सैनिक, स्तावकः = प्रशंसाकारी, स्वाधीनः = स्वतन्त्र, हीनः = छोटा।

नोट—इस स्तम्भ के शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में बाल शब्द के समान, स्त्रीलिङ्ग में आगे कहे गये लता शब्द के समान और नपुंसकलिङ्ग में आगे कहे गये ज्ञान शब्द के समान चलते हैं। परन्तु स्त्रीलिङ्ग में कहीं कहीं मध्य में इकार हो जाता है जो अध्यापक कुछ उदाहरण देकर समझा देवें।

Scanned by CamScanner

भ्वादिगणी परस्मैपदी क्रियाएँ द्वितीय स्तम्भ

पश्यति	= देखता है,	वदति	= कहता है,
पिबति	= पीता है,	वपति	= बोता है,
फलति	= फलता है,	वर्षति	= वर्षता है,
बोधति	= जानता है,	वसति	= वसता है,
व्रजति	= जाता है,	वहति	= ढोता है,
भजति	= भजता है,	वाञ्छति	= चाहता है,
भवति	= होता है,	शोचति	= खेद करता है,
भ्रमति	= घूमता है,	शंसति	= कहता है,
भ्राम्यति	= घूमता है,	श्रयति	= सहारा लेता है,
यच्छति	= देता है,	सर्पति	= सरकता है,
यजति	= पूजता है,	सीदति	= दुख पाता है,
रक्षति	= रक्षा करता है,	स्मरति	= याद करता है,
राजति	= शोभता है,	हरति	= चुराता है,
रोहति	= उपजता है,	हसति	= हँसता है,
लगति	= लगता है,	ह्रसति	= क्षीण होता है,

दृश् = देखना, पा = पीना, फल् = फलना, बुध् = जानना, व्रज् = जाना, भज् = भजना, भू = होना, यज् = पूजना, रक्ष् = रक्षा करना, राज् = शोभना, रुह् = उपजना, लग् = लगना।

वद् = कहना, वप् = बोना, वृष् = वर्षना, वस् = वसना, वह् = ढोना, वाञ्छ् = चाहना, शुच् = खेद करना, शंस् = कहना, श्रि = सहारा लेना, सृप् = सरकना, सीद् = दुःख पाना, स्मृ = स्मरण करना, हृ = चुराना, हस् = हँसना, ह्रस् = क्षीण होना।

Scanned by CamScanner

अनुवाद सहायक नियम

४—स्मरणार्थक धातु के योग में जिसका स्मरण किया जाता है, तद्वाचक शब्द से षष्ठी विभक्ति भी होती है। जैसे—'जनकस्य स्मरति' (पिता की याद करता है) इत्यादि।

५—दानार्थक धातु के योग में जिसे वस्तु दी जाती है तद्वाचक शब्द से चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—'विप्राय धनं यच्छति' (ब्राह्मण को धन देता है) इत्यादि। 'विप्रं धनं यच्छति' वाक्य अशुद्ध होगा।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

चण्डाः सीदन्ति। आवां सन्तुष्टौ भवावः। युवां जाल्मौ हसथः। सः जनकस्य स्मरति। मातुलः जनकं वार्तां (बात को) शंसति। ते जनकाय यच्छन्ति स्म। वयस्यौ श्रयतः। युवां सुतं वाञ्छथः। सुरेशस्य सुतः सुतं वाञ्छति। तौ चारकौ गायतः। यूयं कृपणान् पश्यथ। मूर्खाः भारकाः शोचन्ति। भारतीयः राष्ट्रसचिवः कर्मठः तिष्ठति। पुरोहितं कृपणेषु मुखरं पश्यामि। अधमाः आर्यान् निन्दति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

राजा के सिपाही घूमते हैं। आप सब दूत को देखते हैं। जुलाहे का लड़का घूमता है। पुरुषार्थी मनुष्य आजाद होते हैं। पंच धनी मनुष्य होते हैं। मालिक नफ़र कहता है। दो चोर धनवान को चाहते हैं। द्वारपाल परमात्मा को पूजता है। मुसलमान चाण्डालों से बातें कहते हैं। ढीठ बालक हँसते हैं। सज्जन चुगल से दूर रहते हैं। मुखिया दुःख पाते हैं। नाती दादा को याद करता है। शूर मनुष्य कमजोरों की रक्षा करते हैं। ज्येष्ठ पुत्रः खेद करता है। हलकारा दौड़ता है। नौकर दुष्ट स्वामी को निन्दते हैं। पुत्र पिता को याद करता है।

Scanned by CamScanner

चतुर्थः पाठः

अद् (खाना) धातु का लट्लकार

सः अत्ति = वह खाता है, त्वं अत्सि = तू खाता है,
तौ अत्तः = वे दोनों खाते हैं, युवाम् अत्थः = तुम दोनों खाते हो,
ते अदन्ति = वे सब खाते हैं। यूयम् अत्थ = तुम सब खाते हो।

अहम् अद्मि = मैं खाता हूँ,
आवाम् अद्वः = हम दोनों खाते हैं,
वयम् अद्मः = हम सब खाते हैं।

भा (शोभना)

भाति	भातः	भान्ति,
भासि	भाथः	भाथ,
भामि	भावः	भामः,

या (पाना, जाना)

याति	यातः	यान्ति
यासि	याथः	याथ
यामि	यावः	यामः

अस् (होना) धातु लट्लकार

अस्ति = वह है, स्तः = वे दोनों हैं, सन्ति = वे सब हैं,
असि = तू है, स्थः = तुम दोनों हो, स्थ = तुम सब हो,
अस्मि = मैं हूँ, स्वः = हम दोनों हैं, स्मः = हम सब हैं।

रुद् (रोना)

रोदिति	रुदितः	रुदन्ति,
रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ,
रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः,

विद् (जानना)

वेत्ति	वित्तः	विदन्ति,
वेत्सि	वित्थः	वित्थ
वेद्मि	विद्वः	विद्मः

स्वप् (सोना)

स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति,
स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ,
स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः,

हन् (मारना)

हन्ति	हतः	घ्नन्ति,
हंसि	हथः	हथ,
हन्मि	हन्वः	हन्मः,

Scanned by CamScanner

पक्षि वर्ग

कपोतः = कबूतर, कलहंसः = बतक, काकः = कौआ, कुक्कुटः = मुर्गा, कोषः = अण्डा, खगः = पक्षी, खिङ्गिरः = लोमड़ी, गृध्रः = गीध, घूकः = उल्लू, चकोरः = चकोर, चक्रवाकः = चकवा, चटकः = चिड़वा, चातकः = पपीहा, चाषः = नीलकंठ, चिल्लः = चील, दिवान्धः = चमगादड़, पिकः = कोयल, बकः = बगुला, मयूरः = मोर, वर्तकः = बटेर, शुकः = तोता, श्येनः = बाज, सारसः = सारस, हंसः = हंस।

वन्यपशु वर्ग

ऋक्षः = रीछ, कोकः = भेड़िया या चकवा, गण्डकः = गेंड़ा, गवयः = रोझ, चित्रकायः = चीता, भल्लूकः = भालू, वृकः = भेड़िया, वानरः = बन्दर, व्याघ्रः = तिंदुवा या बाघ, शल्यकः = सेही, शशः = खरगोश, शूकरः = सुअर, शृगालः = सियार, सिंहः = सिंह, हरिणः = हिरण।

कीट वर्ग

किञ्चुकः = केंचुआ, कीटः = कीड़ा, खद्योतः = जुगनू, गोधः = गुआ, टिट्टिभः = टिट्टी, दंशः = डांस, नकुलः = नेवला, पिपीलः = चींटा, भ्रमरः = भौंरा, मत्कुणः = खटमल, मशकः = मच्छर, मूषिकः = चूहा, यूकः = जुवां, वृश्चिकः = बिच्छू, शलभः = पतंग, सरटः = छपकली।

जलजन्तु वर्ग

कच्छपः = कछुवा, कपर्दकः = कौड़ी, कर्कटः = केंकड़ा, घण्टिकः = घड़याल, नागः = सर्प, मकरः = मगर, मीनः = मछली, मण्डूकः = मेढक, शिशुमारः = सूस, सर्पः = सर्प।

Scanned by CamScanner

ग्राम्य पशुवर्ग

अजः = बकरा, अश्वः = घोड़ा, उष्ट्रः = ऊँट, कुक्कुरः = कुत्ता, गजः = हाथी, गर्दभः = गधा, विड़ालः = बिलाव, महिषः = भैंसा, मेषः = मेंढ़ा, रासभः = गधा, वत्सः = बछड़ा, वृषभः = बैल।

देव वर्ग

इन्द्रः = इन्द्र, कल्पवृक्षः = कल्पवृक्ष, किरणः = किरण, कृष्णः = कृष्ण, गणेशः = गणेश, गुहः = कार्तिकेय, चतुराननः = ब्रह्मा, चन्द्रः = चन्द्रमा, जिनः = अरिहन्त, तडागः = तालाब, तीर्थः = तीर्थस्थान, दशाननः = रावण, देवः = देव, दानवः = दैत्य, पवनः = हवा, पावकः = अग्नि, बुद्धः = बुद्ध, मदनः = काम-देव, मेघः = बादल, यमः = काल, रामः = राम, शिवः = महादेव, सागरः = समुद्र, सुरः = देव, सूर्यः = सूर्य, स्वर्गः = स्वर्ग।

संज्ञावाचक अकारान्त पुल्लिङ्गशब्द

अरघट्टः = रांहट, अर्थः = धन, आकरः = खानि, आतपः = घाम, आपणः = दुकान, आयः = आमद, आर्यावर्तः = भारतवर्ष, आहारः = भोजन, उच्चारः = मल, करकः = ओला, कल्लोलः = लहर, कोल्हकः = कोल्हू, कूपः = कुआ, केदारः = खेत. कोटीश्वरः = करोड़पति, कोशः = कोश, गुच्छकः = गुच्छा, ग्रासः = कौर।

जीवः = प्राणी, दावः = वनाग्नि, निर्झरः = झरना, निवेशः = डेरा, निर्मोकः = कांचली, नीडः = घोंसला, पोरः = पोर, प्राणः = प्राण, प्रातराशः = कलेबा, फेनः = फेन, बुद्बुदः = बबूला, भोगः = सर्प का शरीर या भोग. मार्गः = रास्ता, लक्षाधीशः = लक्षपती, लोकः = संसार, वर्षोपलः = ओला, वाक्दण्डः =

Scanned by CamScanner

चरखा, वारः = वार, वीरः = शूर, शरः = बाण, शाणः = कसौटी, शीकरः = जलकण, समाजः = समाज, सूतः = सारथी, संग्रामः = युद्ध, हट्टः = बाजार।

सामान्य अकारान्त पुल्लिङ्गशब्द

अधिकारः = अधिकार, अनुनयः = प्रार्थना, अनुरागः = स्नेह, अपकारः = अनादर, अपवादः = बदनामी, अभिग्रहः = डाँट, अभिप्रायः = मनोरथ, अभिषेकः = स्नान, अभिस्तावः = सिफारिश, अभ्यासः = मुहावरा, अभ्युदयः = उत्कर्ष, अर्घः = मूल्य; दर या भाव, अलाभः = हानि, अवसरः = मौका, आकारः = आकार, आदरः = सन्मान, आलापः = वार्तालाप, आवेगः = घबड़ाहट या आवेश, आशीर्वादः = आशिष, आश्रयः = सहारा, अंशः = भाग।

उत्पातः = उपद्रव, उत्सवः = उत्सव, उद्योगः = प्रयत्न, उपकारः = उपकार, उपदेशः = शिक्षा, उपवासः = अनशन, कटाक्षः = कटाक्ष, कलकलः = कोलाहल, कलङ्कः = दोष, कामः = काम, कोपः = क्रोध, गर्वः = घमण्ड, गुणः = गुण, चीत्कारः = चिल्लाहट, जयः = जय या जीत, जम्पः = कूदना, जीर्णोद्धारः = मरम्मत, तलप्रहारः = चांटा, तापः = गर्मी, तावकीनः = तेरा, त्यागः = दान, त्रासः = डर, त्रिवर्गः = धर्म-अर्थ-काम, द्वेषः = द्वेष, दुराग्रहः = हठ, धर्मः = धर्म, ध्येयः = मन्तव्य।

निराधारः = तथ्यहीन, निर्यातकरः = निकासी टैक्स, निर्वाहः = गुजारा, निश्चयः = निश्चय, निरोधः = मनाही, न्यासः = अमानत, पराजयः = हार, परीवाहः = बाढ़, प्रतिवासः = पड़ौस, भारः = बोझ, रोमन्थः = रौंथी, विवाहः = विवाह, सन्देशः = सँदेशा, सारः = निचोड़, स्तवः = तारीफ, स्वभावः =

Scanned by CamScanner

स्वभाव या आदत, संशयः = सन्देह, हठः = जबरदस्ती, हासः = हँसी।

इस पाठके सभी शब्दों के रूप बालशब्द के समान चलते हैं।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

त्रस्तः मूषिकः धावति। रासभौ भारं वहतः। अवशाः मयूराः भ्राम्यन्ति। गजे भ्रमराः पतन्ति। क्रूरौ महिषौ धावतः। पिकाः आम्रे तिष्ठन्ति। चक्रवाकाः नदन्ति। खगाः नीडे वसन्ति। हट्टः कोशे तिष्ठति। ते आशीर्वादं वाञ्छन्ति। देवाः दानवान् घ्नन्ति। अहं त्वां वेद्मि। आकरे मयूराः भान्ति। यूयम् आवेगेन अत्थ। प्रतिवासे शल्यकः रोदिति। लक्षाधीशस्य उत्पातं पश्यामि। आर्यावर्तस्य अध्यक्षः अस्मि।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

नौकर बोझ ढोते हैं। तेरा बैल मेरे घास को खाता है। आम पर कोयलें शोभती हैं। दो मेंढ़े खेलते हैं। सियार घूमते हैं। खरगोश दौड़ते हैं। बेल के वृक्ष हैं। हे जगदीश तेरा जिनेश हठ से पढ़ता है। तुम सब सोते हो। मल्लाह समुद्र को जाते हैं। दुकानदार सन्तुष्ट होते हैं। खटमल डसते हैं। किसान रोते हैं। माली गुलाब के वृक्ष को ले जाता है। चरवाहा भालू के बच्चों को मारता है।

Scanned by CamScanner

पंचमः पाठः

अकारान्त नपुँसकलिङ्ग ज्ञानशब्द

प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानैः
चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
पंचमी	ज्ञानात्	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
षष्ठी	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
सम्बोधन	हे ज्ञान	हे ज्ञाने	हे ज्ञानानि

संज्ञावाचक नपुँसकलिङ्ग अकारान्तशब्द

अन्तःपुरम् = रनवास, आलवालम् = क्यारी, इन्द्रियम् = इन्द्रिय, उद्यानम् = बाग, कमलम् = कमल, कुटुम्बकम् = वंश, क्षेत्रम् = खेत या तीर्थस्थान, गगनम् = आकाश, गहनम् = जंगल, गेहम् = मकान, गोष्ठम् = गायों के ठहरने का स्थान, चित्रम् = तसवीर, नीरम् = जल, पत्रम् = पत्र, परितोषिकम् = इनाम।

पीयूषम् = अमृत, पुस्तकम् = पुस्तक, बीजम् = बीज, भ्राष्ट्रम् = भाड़. मन्त्रिमण्डलम् = मिनिस्ट्री, मन्दिरम् = देवालय या मकान, योजनम् = योजन, रसायनम् = प्राणरक्षकरस, राज्यम् = राज्य, रोकम् = नकद, वित्तम् = धन, वृन्तम् = डंठल, शीर्षकम् = हेडिंग या शीर्षक, सरोजम् = कमल, साम्राज्यम् = बादशाही, हिमम् = बर्फ।

सामान्य नपुँसकलिङ्ग अकारान्त शब्द

अतिमात्रम् = अधिक, अद्यतनम् = आज का उत्पन्न, अधिकम् = अधिक, अनारतम् = लगातार, अनुकूलम् = अनुकूल,

Scanned by CamScanner

अनुष्ठानम् = धार्मिक कार्य, अनुसन्धानम् = खोज, अन्तिकम् = पास, अमलम् = निर्दोष, अर्वाचीनम् = प्राचीन, अवसानम् = समाप्ति, अश्लीलम् = घृणित, अपसव्यम् = बांया, अहितम् = अकल्याण, आग्नेयम् = आग्नेय, आतङ्कम् = डर।

आनयनम् = लाना, आयत्तम् = अधीन, आयातम् = बाहर से वस्तु का आना, आराधनम् = पूजा, आरोग्यम् = स्वास्थ्य, आर्द्रम् = गीला, आवश्यकम् = जरूरी, इदानीन्तनम् = आधुनिक, इन्द्रजालम् = जादू, उचितम् = योग्य, उपायनम् = भेट, उदीचीनम् = उत्तर में रहने वाला, ऊनम् = कम, ऐक्यम् = मेल, ऐशानम् = ईशान, औदार्यम् = उदारता, औष्ण्यम् = गर्मी।

कमनीयम् = सुन्दर, कल्याणम् = हित, कापट्यम् = कपट, कार्पण्यम् = कंजूसी, केवलम् = अकेला, कौटिल्यम् = कुटिलता, गोप्यम् = गोपनीय, गौरवम् = महत्त्व, चित्तम् = मन, ग्रन्थिलम् = गांठदार, चरित्रम् = आचरण, चौर्यम् = चोरी, जीर्णम् = पुराना, तथ्यम् = वास्तविक, तत्त्वम् = सत्य, तीव्रम् = तेज, तुहिनम् = पाला, दर्शनम् = श्रद्धा, दुर्दिनम् = बदरी, दुष्करम् = कठिन।

दृढम् = मजबूत, दैन्यम् = दीनता, दैवम् = भाग्य, दौर्जन्यम् = नीचता, दौर्बल्यम् = कमजोरी, धैर्यम् = धैर्य, नाट्यम् = नाटक, नियन्त्रणम् = कंट्रोल, निर्मलम् = साफ, निर्यातम् = वस्तु का बाहर जाना, निष्फलम् = व्यर्थ, नैजम् = अपना, नैपुण्यम् = चातुर्य, नैमित्तकम् = कारणजन्य, नैसर्गिकम् = स्वाभाविक, नैष्ठुर्यम् = कठोरता, न्यूनम् = कम।

पैशून्यम् = चुगली, परकीयम् = पराया, परोक्षम् = परोक्ष, पवित्रम् = शुद्ध, पाटवम् = चातुर्य, पातकम् = पाप, पुण्यम् = पुण्य, पुष्कलम् = बहुत, पेशलम् = मनोहर, पौरुषम् = उद्योग, प्रतिकूलम् = विपरीत, प्रत्यक्षम् = सामने, प्रस्थानम् = यात्रा,

Scanned by CamScanner

प्राधान्यम् = मुख्यता, फलम् = नतीजा, फुल्लम् = खिला हुआ, बलम = ताकत, बाल्यम् = लड़कपन, बाहुल्यम् = बहुतायत।

भूयिष्ठम् = अधिक, मनोज्ञम् = सुन्दर, मलिनम् = मैला, महर्घम् = कीमती, मात्सर्यम् = डाह, मान्द्यम = आहिस्ते, मासिकम् = महिने का, मूल्यम् = कीमत, मौखर्यम् = बकवाद, मौखिकम् = जबानी, यौवनम् = जवानी, रन्ध्रान्वेषणम् = नुक्ताचीनी, रम्यम् = सुन्दर, लालनम = लाड़, लालित्यम् = मनोहरता, लौकिकम् = लोक सम्बन्धी।

वर्तुलम् = गोल, वायव्यम् = वायव्य, विपुलम् = अधिक, विशुद्धम् = पवित्र, वृद्धत्वम् = बुढ़ापा, वैधव्यम् = रँड़ापा, व्यवधानम् = अन्तर, व्यसनम् = आसक्ति, शकलम् = टुकड़ा, शकुनम् = शकुन, शाठ्यम् = धूर्तता, शीघ्रम् = जल्दी, शैत्यम् = ठण्ड, शैथिल्यम् = शिथिलता, शैशवम् = लड़कपन, शौर्यम् = शूरता, षड्यन्त्रम् = कुचक्र, समीचीनम = यथार्थ, समीपम् = पास।

सख्यम् = दांयां, सातत्यम् = निरन्तर, साम्यम् = बराबरी, साहाय्यम् = सहायता, सुकरम् = सरल, सुकृतम् = पुण्य, सुचरितम् = सदाचार, सूक्ष्मम = बारीक, सौकर्यम् = सरलता, सौजन्यम् = सज्जनता, सौविध्यम् = सुभीता, स्थूलम् = मोटा, स्थैर्यम् = स्थिरता, स्थौल्यम् = मुटाई, स्वीयम् = निजी।

इस पाठ के समस्त शब्दों के रूप नपुन्सक लिङ्ग में ज्ञानशब्द के समान चलते हैं।

अनुवाद सहायक नियम

६—किसी भी हलादि शब्द के पहले 'अ' तथा अजादि शब्द के पहले 'अन' लगा देने से वह निषेधार्थक हो जाता है। जैसे हितम् से अहितम्। अश्वः से अनश्वः इत्यादि। न; नो = नहीं।

Scanned by CamScanner

७—गृहशब्द के रूप नपुँसक लिङ्ग में तीनों वचनों में ज्ञान शब्द के समान चलते हैं। किन्तु 'गृहाः पुंसि च भूम्न्येव' इस अमरवाक्य के अनुसार गृहशब्द का पुल्लिङ्गप्रयोग बहुवचन में ही होता है। जैसे—'गृहानिव नृपान्' धर्मशर्माभ्युदय सर्ग ३ श्लोक १०।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

गोष्ठे वृषभाः घासं खादन्ति। क्षेत्रस्य मूल्यं नो लगति! उपवने मित्रे क्राम्यतः। भागिनेयः उपायनं वाञ्छति। मार्गे जगदीशस्य मन्दिरम् भाति। हलवाहकौ क्षेत्रे वीजं वपतः। कूपस्य जलम् अमलं भवति। पुस्तकस्य शीर्षकं पश्यसि? कार्यस्य अवसानं वाञ्छामि। जिनगृहान् पश्यसि? कार्पण्येन जनानाम् अहितं पश्यामि। सः जिनेशस्य शैशवम् वदति। नीरे सरोजानि भान्ति। दैवज्ञः मासिकं फलं मनोज्ञं शंसति। ते परकीयं साहाय्यं वाञ्छन्ति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

मन्दिरों में देवों के चित्र होते हैं। राजा का पौरुष रनवास में नहीं चलता। डाह से मनुष्य का गौरव नष्ट हो जाता है। तेरा मामा जरूरी पत्र पढ़ता है। मिनिष्ट्री का गौरव गोपनीय नहीं है। बुढ़ापे में स्वाभाविक कमजोरी होती है। हलकारा के पास चिट्ठियाँ हैं। पड़ोस के कुए का जल कमजोरी हरता है। माली अपनी नीचता नहीं छोड़ता। नौकर पहाड़ पर पानी ले जाते हैं। दो चित्रकार चित्रों का चातुर्य देखते थे। मनुष्य प्रस्थान में स्वाभाविक शकुन चाहते हैं। वैधव्य विपुल पाप का फल है। चुगली विशाल पाप है। अपनी चतुराई गोपनीय होती है।

Scanned by CamScanner

षष्ठः पाठः

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लताशब्द

प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते	हे लते	हे लताः

आकारान्त संज्ञावाचक स्त्रीलिङ्ग शब्द

अजा = बकरी, अश्विका = बछेरी, आपगा = नदी, आपणिका = दुकान, उर्वरा = उपजाऊ भूमि, कथा = कहानी, कमला = लक्ष्मी, कला = हुनर, कलिका = कली, कुल्या = नहर, कूपिका = बावड़ी, केका = मोर की बोली, क्षुद्रा = मधुमक्खी, गिरिजा = पार्वती, गोधा = गोह, घोटिका = घोड़ी, चटिका = चिड़िया, चन्द्रिका = चाँदनी, चपला = बिजली, जलौका = जौंक।

ज्वाला = लौं, तारा = नक्षत्र, दुग्धिका = दुधी, दूर्वा = दूब, दूषिका = नेत्रमल, द्विजा = ब्राह्मणी, नौका = नाव, पण्यका = दुकानदारिन, परिखा = खाई, पादुका = खड़ाऊँ, पिच्छिका = पीछी, पिपीलिका = चिंवटी, पुत्तलिका = पुतलिया, प्रजा = जनता, प्रतिमा = मूर्ति, प्रपा = पौसरा, फणा = फण, भस्त्रा = धौंकनी, मक्षिका = मक्खी, मदिरा = शराब, माला = माला।

Scanned by CamScanner

मूषा = घरिया, मृत्तिका = मिट्टी, रथ्या = सड़क, लघुशङ्का = पेशाब, लघुसूचिका = आलपिन, लिक्षा = लीख, लूता = मकड़ी, वन्ध्या = बांझ, वरटा = हंसिनी, वसुधा = पृथिवी, वात्या = आंधी, वृक्षशायिका = गिलहरी, वेश्या = वेश्या, वैश्या = वैश्या की स्त्री, शलाका = गज, शारदा = सरस्वती, शाला = विद्यालय, शिला = पत्थर, शिंशपा = सीसम, शुक्तिका = सीप, शूद्रा = शूद्रा की स्त्री, सम्बिका = साम, सारिका = मैना, सामिका = दीमक।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग सामान्यशब्द

अर्चा = पूजा, अनुज्ञा = अनुमति, अवस्था = हालत, आज्ञा = हुक्म, आस्था = श्रद्धा, उत्तरा = उत्तर, उच्चता = ऊँचाई कल्पना = विचार, किङ्का = भेंट, कृतज्ञता = उपकार का मानना, क्रिया = काम, क्रीडा = खेल, क्षमा = क्रोधविजय, गणना = गिनती, गुरुता = गौरव, घटना = घटना, चिन्ता = फिकर, जरा = बुढ़ापा।

त्रपा = लज्जा, दुर्बलता = कमजोरी, देशना = उपदेश, धवलता = सफेदी, नम्रता = विनय, निद्रा = नींद, निशा = रात, पञ्चता = मृत्यु, पटुता = चतुराई, पामरता = नीचता, पिशुनता = चुगलपन, पूर्वा = पूर्व, पृथा = रिवाज, प्रज्ञा = बुद्धि, प्रतिज्ञा = इकरार, प्रतिद्वन्दिता = होड़, प्रतीक्षा = इन्तजार, प्रभा = चमक, प्रमीला = ऊँघना, प्रशंसा = तारीफ, प्रसन्नता = खुशी, भवितव्यता = होनहार।

भिक्षा = भीख, भूषा = सजावट, मनोज्ञता = सुन्दरता, मर्यादा = सीमा, माया = कपट, मित्रता = मैत्री, मृगया = शिकार, यात्रा = सफर, योग्यता = लियाकत, वरयात्रा = बरात, वर्षाः (बहुवचन) वृष्टि, वार्ता = बात, विद्या = शिक्षा, व्यथा = पीड़ा, शङ्का = सन्देह, शवक्रिया = दफन, शोभा = शोभा, श्रद्धा = विश्वास

Scanned by CamScanner

श्लाघा=प्रशंसा, सपर्या=सत्कार, समता=बराबरी, साधुता =सज्जनता, सेवा=तावेदारी, स्वता=अधिकार।

सन्नन्त आकारान्त स्त्रीलिङ्गशब्द

इच्छा=इच्छा, चिकीर्षा=करने की इच्छा, जिगमिषा= जाने की इच्छा, जिगीषा = जीतने की इच्छा, जिजीविषा= जीने की इच्छा, जिज्ञासा=जानने का इच्छा या प्रश्न, दिदृक्षा= देखने की इच्छा, पिपासा=पीने की इच्छा, पृच्छा = पूछने की इच्छा, बुभुक्षा = भोजन की इच्छा, बुभुत्सा = जानने की इच्छा, लिप्सा=पाने की इच्छा, विधित्सा=करने की इच्छा, विवक्षा=कहने की इच्छा, शुश्रूषा–सेवा की इच्छा।

बालिकाओं के सुन्दर नाम

आशा, इन्द्रा, कमला, कला, कल्पना, चन्द्रकान्ता, पुष्पा, प्रभा, मणिप्रभा, मनोरमा; माया, यशोदा, रमा, विजया, विद्या, विमला, वीणा, शकुन्तला, शशिप्रभा. शारदा, सरला, सुधा, सुभद्रा, सुलोचना, सुशीला।

इस पाठ के सभी स्तम्भों के शब्दों के रूप स्त्रीलिङ्ग लताशब्द के समान चलते हैं। उत्तरा, दक्षिणा और पूर्वा शब्द के रूप आगे कहे गये सर्वाशब्द के समान होते हैं। सर्वादिगण पठित उत्तरा आदि शब्दों में कुछ और भी विशेषता है जो अध्यापक महाशय से जानना।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

वयं वरयात्रायां गच्छामः। बालाः क्रीडां वाञ्छन्ति। चिन्तया दुर्बलतां यासि। पञ्चताम् अधमाः वाञ्छन्ति। अन्तःपुरे द्विजे स्वपितः। जरायां निद्रा हसति। वयं क्षेत्रस्य सीमायाम् अद्य! तौ जिगीषया यातः। वैश्यायाः अजे रुदितः। चन्द्रः

निशायां गौरवं याति। विद्यया प्रज्ञायां गुरुता भवति। कलया नरः शोभां याति। अधमाः पिशुनतां नो त्यजन्ति। वयं सेवां नो विद्मः। वीणा कमलायाः प्रतीक्षायां तिष्ठति।

हिन्दी से संस्कृत

बरात की शोभा वर से होती है।	वरयात्रायाः शोभा वरेण भवति।
शिकार नीच खेलते हैं।	मृगयाम् अधमाः क्रीडन्ति।
दो ब्राह्मणियाँ रोती हैं।	द्विजे रुदितः।
वेश्या का गौरव नष्ट हो जाता है।	वेश्यायाः गौरवं (गुरुता) ह्रसति।
मदिरा को मूर्ख पीते हैं।	मदिरां मूर्खाः पिबन्ति।
हम सब पिता की आज्ञा चाहते थे।	वयं जनकस्य आज्ञां वाञ्छामः स्म।
बुढ़ापे में बुद्धि क्षीण हो जाती है।	वार्धक्ये बुद्धिः ह्रसति।
विद्या विनय से शोभती है।	विद्या विनयेन भाति।
चोर रात्रि में नहीं सोते।	चौराः निशायां नो स्वपन्ति।
शत्रु के जीतने की इच्छा से जाता हूँ।	शत्रूणां जिगीषया गच्छामि।
नदी प्यास को हरती है।	आपगा पिपासां हरति।
हम सब नहर पर हैं।	वयं कुल्यायां स्मः।
सज्जन क्षमा नहीं छोड़ते।	सज्जनाः क्षमां नो त्यजन्ति।
दुर्जन सज्जनता नहीं देखते।	दुर्जनाः सौजन्यं नो पश्यन्ति।
ब्राह्मण कथाएँ कहते थे।	विप्राः कथाः शंसन्ति स्म।

Scanned by CamScanner

सप्तमः पाठः

जुहोत्यादिगणी दानार्थकदाधातु-लट्लकार

सः ददाति = वह देता है। त्वं ददासि = तू देता है।
तौ दत्तः = वे दोनों देते हैं। युवां दत्थः = तुम दोनों देते हो।
ते ददति = वे सब देते हैं। यूयं दत्थ = तुम सब देते हो।
अहम् ददामि = मैं देता हूँ।
आवाम् दद्वः = हम दोनों देते हैं।
वयम् दद्मः = हम सब देते हैं।

ज्ञानार्थकज्ञाधातु-लट्लकार

सः जानाति = वह जानता है। त्वं जानासि = तू जानता है।
तौ जानीतः = वे दोनों जानते हैं। युवाम् जानीथः = तुम दोनों जानते।
ते जानन्ति = वे सब जानते हैं। यूयम् जानीथ = तुम सब जानते हो।
अहम् जानामि = मैं जानता हूँ।
आवाम् जानीवः = हम दोनों जानते हैं।
वयम् जानीमः = हम सब जानते हैं।

अकारान्त सर्वशब्द के रूप

पुल्लिङ्ग			स्त्रीलिङ्ग		
सर्वः	सर्वौ	सर्वे,	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्,	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः,	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः,	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः,	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्,	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु,	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

Scanned by CamScanner

नपुंसकलिङ्ग सर्व शब्द के रूप

सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

नोट—पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व और अन्तर शब्द की प्रथमा के बहुवचन में पूर्वे पूर्वाः, पञ्चमी के एकवचन में पूर्वस्मात् पूर्वात् तथा सप्तमी के एकवचन में पूर्वस्मिन् पूर्वे इत्यादि दो दो रूप होते हैं। शेषरूप सर्वशब्द के समान चलते हैं।

उभ (दो) शब्द के रूप केवल द्विवचन में तथा उभय (जोड़ा) शब्द के रूप केवल बहुवचन में सर्वशब्द के समान चलते हैं।

अन्यः = दूसरा, अन्यतरः = दो में से एक, इतरः = दूसरा, कतमः = बहुत में से कौन, कतरः = दो में से कौन, तृतीयः = तीसरा, द्वितीयः = दूसरा। शब्दों के रूप ४, ५, ६, ७ विभक्तियों के तीनों लिङ्गों में सर्व शब्द के समान चलते हैं। परन्तु किन्हीं शब्दों में कुछ विशेषता है जो अध्यापक महाशय से समझना चाहिये।

अस्मद् (हम) शब्द के रूप

अहम् = मैं, आवाम् = हम दोनों, वयम् = हम सब। माम् = मुझको, आवाम् = हम दोनों को, अस्मान् = हम सबको। मया = मैंने, आवाभ्याम् = हम दोनों ने, अस्माभिः = हम सबने। मह्यम् = मेरे लिये, आवाभ्याम् = हम दोनों के लिये, अस्मभ्यम् = हम सब के लिये। मत् = मुझसे, आवाभ्याम् = हम दोनों से, अस्मत् = हम सब से। मम = मेरा, आवयोः = हम दोनों का, अस्माकम् = हम सब का। मयि = मुझमें; पर, आवयोः = हम दोनों में; पर, अस्मासु = हम सब में; पर।

Scanned by CamScanner

युष्मद् (तुम) शब्द के रूप

त्वम्, युवाम्, यूयम् । त्वाम्, युवाम्, युष्मान् । त्वया, युवाभ्याम्, युष्माभिः । तुभ्यम्, युवाभ्याम्, युष्मभ्यम् । त्वत्, युवाभ्याम्, युष्मत् तव, युवयोः, युष्माकम् । त्वयि, युवयोः, युष्मासु।

इस शब्द के रूपों का अर्थ अस्मद्शब्द के समान लगाना चाहिये।

पु० तत् (वह) शब्द के रूप

सः = वह, तौ = वे दोनों, ते = वे सब । तम् = उसको, तौ = उन दोनों को, तान् = उन सबको । तेन = उसने, ताभ्याम् = उन दोनों ने, तैः = उन सब ने । तस्मै = उसके लिये, ताभ्याम् = उन दोनों के लिये, तेभ्यः = उन सब के लिये । तस्मात् = उससे ताभ्याम् = उन दोनों से, तेभ्यः = उन सब से, तस्य = उसका तयोः = उन दोनों का, तेषाम् = उन सबका । तस्मिन् = उसमें; पर, तयोः = उन दोनों में; पर, तेषु = उन सबमें; पर ।

इसी प्रकार पु० एतत् (यह) शब्द के एषः एतौ, एते इत्यादि। पु० किम् (कौन) शब्द के कः, कौ, के इत्यादि तथा यत् (जो) शब्द के यः, यौ, ये इत्यादि रूप होते हैं ।

पुल्लिङ्ग अदस् (यह) शब्द के रूप

प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

Scanned by CamScanner

पु० इदम् (यह) शब्द के रूप

अयम् = यह, इमौ = ये दोनों, इमे = ये सब। इमम् = इसको, इमौ = इन दोनों को, इमान् = इन सबको। अनेन = इसने, आवाभ्याम् = इन दोनों ने, एभिः = इन सबने। अस्मै = इसके लिये, आभ्याम् = इन दोनों के लिये, एभ्यः = इन सब के लिये। अस्मात् = इससे, आभ्याम् = इन दोनों से, एभ्यः = इन सबसे। अस्य = इसका, अनयोः = इन दोनों का, एषाम् = इन सबका। अस्मिन् = इसमें; पर, अनयोः = इन दोनों में, पर, एषु = इन सब में; पर।

पु० भवत् [आप] शब्द के रूप

भवान्, भवन्तौ, भवन्तः। भवन्तम्, भवन्तौ, भवतः। भवता, भवद्भ्याम्, भवद्भिः। भवते, भवद्भ्याम्, भवद्भ्यः। भवतः, भवद्भ्याम्, भवद्भ्यः। भवतः, भवतोः, भवताम्। भवति, भवतोः, भवत्सु। हे भवन्, हे भवन्तौ, हे भवन्तः।

पुल्लिङ्ग श्रीमत् (श्रीमान्) तथा धीमत् (बुद्धिमान्) शब्द के रूप भी इसी प्रकार चलते हैं।

* कतिपय त्रिलिङ्ग शब्द *

ईदृशः = ऐसा, ईदृशी = ऐसी, ईदृशम्, ऐसा। कीदृशः = कैसा, कीदृशी = कैसी, कीदृशम् = कैसा। तादृशः = तैसा, तादृशी = तैसी, तादृशम् = तैसा। त्वादृशः = तुझसा, त्वादृशी = तुझसी, त्वादृशम् = तुझसा, भवादृशः = आपसा, भवादृशी = आपसी, भवादृशम् = आपसा। मादृशः = मुझ सा, मादृशी = मुझसी, मादृशम् = मुझसा।

तदीयः = उसका, तदीया = उसकी, तदीयम् = उसका। त्वदीयः = तेरा, त्वदीया = तेरी, त्वदीयम् = तेरा। भवदीयः = आपका, भवदीया = आपकी, भवदीयम् = आपका। मदीयः =

Scanned by CamScanner

मेरा, मदीया = मेरी, मदीयम् = मेरा। का (स्त्री) = कौन, किम् (नपु०) = कौन, इयम् (स्त्री०) = यह, इदम् (नपुं०) = यह, या (स्त्री) = जो, तत् = (नपुं०) जो, सा (स्त्री) = वह, तत् (नपु०) = वह।

नोटः—इनमें अकारान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में बालशब्द के समान और नपुंसकलिङ्ग में ज्ञानशब्द के समान चलते हैं। तथा आकारान्त शब्दों के रूप लताशब्द के समान और ईकारान्त शब्दों के रूप आगे कहे जाने वाले महीशब्द के समान चलते हैं। किम् और इदम् आदि शब्दों के रूप पहले लिखे जा चुके हैं।

संस्कृत से हिन्दी बनाओ।

वयं तेभ्यः भोजनं दद्मः। आवाम् अस्मै उपायनं दद्वः। अहं तुभ्यं किञ्चां ददामि। आवां भवतः कथां जानीवः। वयं त्वदीयां कथां नो जानीमः। सः कस्य बालः पठति। मम मातुलः मह्यम् अनुज्ञां नो ददाति। युष्माकं समीपे के के तिष्ठन्ति। ईदृशाय कृतघ्नाय सः नो ददाति। मादृशं विप्रं के न जानन्ति। आर्यावर्ते प्रमुखाः के के सन्ति। मादृशः मानवः नास्ति। त्वं कतरं जानासि। युवां कतमं जयथः। अयं मां नो जानाति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ।

वे सब पिता को देते थे। मैं उस छात्र को पुस्तक देता हूँ। मेरे पर तेरा सन्देह रहता है। तुम सब हम सब को नहीं जानते हो। तुम धूर्तों की वे निन्दा करते हैं। हम दोनों को आप दोनों देते हैं। मैं दो को नहीं देता हूँ। वे सब, उन सबको जानते हैं। वे सब कैसी सजावट को चाहते हैं। श्रीमान् के लिये कौन देता है। हम दोनों आपको जानते हैं। आपको कौन कौन जानते हैं? मेरा चाचा मुझ को पुस्तक नहीं देता। कुए पर कौन कौन श्रीमान् हैं।

Scanned by CamScanner

अष्टमः पाठः

परस्मैपदी कृ (करना) धातु

सः करोति = वह करता है । त्वं करोषि = तू करता है ।
तौ कुरुतः = वे दोनों करते हैं । युवां कुरुथः = तुम दोनों करते हो ।
ते कुर्वन्ति = वे सब करते हैं । यूयं कुरुथ = तुम सब करते हो ।

अहं करोमि = मैं करता हूँ ।
आवां कुर्वः = हम दोनों करते हैं ।
वयं कुर्मः = हम सब करते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग तत् शब्द

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	तां	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

नोट—इसी प्रकार स्त्रीलिङ्ग यत् शब्द के या, ये, याः इत्यादि तथा स्त्रीलिङ्ग किम् शब्द के का, के, काः इत्यादि रूप होते हैं ।

स्त्रीलिङ्ग अदस् शब्द

प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पंचमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः

Scanned by CamScanner

षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

स्त्रीलिङ्ग इदम् शब्द

प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

स्त्रीलिङ्ग एतत् शब्द

प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

भवत् और श्रीमत् शब्द के रूप स्त्रीलिङ्ग में भवती, भवत्यौ, भवत्यः आदि तथा श्रीमती, श्रीमत्यौ, श्रीमत्यः आदि आगे कहे गये महीशब्द के समान होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग सर्वनामशब्दों के रूप

अदस् शब्द			तत् शब्द		
अदः	अमू	अमूनि,	तत्	ते	तानि,
अदः	अमू	अमूनि,	तत	ते	तानि,

Scanned by CamScanner

न० इदम् शब्द

इदम्	इमे	इमानि,
इदम	इमे	इमानि,

न० एतत् शब्द

एतत्	एते	एतानि,
एतत्	एते	एतानि,

न० भवत् शब्द

भवत्	भवती	भवन्ति,
भवत	भवती	भवन्ति,

न० श्रीमत् शब्द

श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति,
श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति,

एकशब्द के रूप

पु०	स्त्री०	नपुं०
एकः	एका	एकम्
एकम्	एकाम्	एकम्
एकेन	एकया	
एकस्मै	एकस्यै	
एकस्मात्	एकस्याः	
एकस्य	एकस्याः	
एकस्मिन्	एकस्याम्	

द्विशब्द के रूप

पु०	स्त्री०	नपुं०
द्वौ	द्वे	द्वे
द्वौ	द्वे	द्वे
द्वाभ्याम्		
द्वाभ्याम्		
द्वाभ्याम्		
द्वयोः		
द्वयोः		

द्विशब्द के स्त्री व नपुं० लिङ्ग में तृतीया से सप्तमी तक के रूप द्विशब्द के पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

त्रि (तीन) शब्द के रूप

विभक्तियां	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पंचमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

Scanned by CamScanner

अनुवादसहायकनियम चतुर्थस्तम्भ

८—इदम् और एतत् शब्द की द्वितीया विभक्ति, तृतीया के एकवचन और षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति के द्विवचन में 'एन' आदेश होता है। जिसमें वहां इनके दो दो रूप होते हैं। जैसे—एनम् एनौ, एनान्। एनेन, एनयोः इत्यादि। तथा स्त्रीलिङ्गमें एनाम्, एने, एनाः। एनया, एनयोः इत्यादि।

९—सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता।

१०—अस्मद् और युष्मद् शब्द की २, ४, ६ विभक्ति के तीनों वचनों में वैकल्पिक रूप भी होते हैं। जैसे—

अस्मद्शब्द			युष्मद्शब्द		
द्वितीया	चतुर्थी	षष्ठी	द्वितीया	चतुर्थी	षष्ठी
मा	मे	मे	त्वा	ते	ते
नौ	नौ	नौ	वाम्	वाम्	वाम्
नः	नः	नः	वः	वः	वः

११—इन वैकल्पिक रूपों का प्रयोग वाक्य के आरम्भ में, सम्बोधन के रूपों के पश्चात्, कविता (पद्य) के चरण के प्रारम्भ में और च, वा, ह (आश्चर्य वा खेद), एव इन अव्ययों के साथ नहीं होता।

१२—युष्मद् और अस्मद् शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

१३—किम् शब्द के तीनों लिङ्गों की सातों विभक्तियों के रूपों के साथ 'सन्धि' करके 'चित्' शब्द लगाकर भी प्रयोग किया जाता है। जैसे कश्चित्, केचित्, कस्मैचित्, कस्यचित् केषाञ्चित्, कानिचित्, काचित्, काश्चित्, कस्यैचित्, कस्याश्चित्, कासाञ्चित् इत्यादि।

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

वयं चन्द्रस्य चित्रं कुर्मः। युवां मम वार्तायां सन्देहं कुरुथः? नृपौ प्रजायाः कल्याणं कुरुतः। यूयं जगदीशस्य अभिषेकं कुरुथ। केचित् मानवाः विपुलं पातकं कुर्वन्ति। एकस्याः कार्यं तिस्रः कुर्वन्ति। कस्यचित् प्रतीक्षायां गच्छामि। एकस्याः कन्यायाः वरयात्रा गच्छति। आकरे भारवहाः निर्यातं कुर्वन्ति। तस्याः वैधव्यम् अहं जानामि। इमाः कन्याः कमनीयं गायन्ति। भवत्यां मे अनुरागः नास्ति। ते तस्यै पारितोषिकं ददति। भवद्भ्यः वयम् दद्मः। अहम् एकस्यै ददामि।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

वे सब उनमें तीन को जानते हैं। हम दोनों परमात्मा का अभिषेक करते हैं। ये दोनों उनके लिये पुस्तक देते हैं। मैं उस छात्र को भेंट देता हूँ। तीन मैनाएं खेलती हैं। दो मनुष्य खाते थे। एक की एक से मित्रता है। तीन लड़कियां पढ़ती थीं। इसका वर हँसता है। उसके लड़के रोते हैं। इस लड़की (कन्या) को सब चाहते हैं। उसमें मेरा अनुराग है। माया के लड़के पढ़ते थे। दो का काम एक करता है। इसकी प्रशंसा कौन कौन करते हैं।

Scanned by CamScanner

नवमः पाठः

अव्यय का लक्षण

तीनों लिङ्गों, तीनों वचनों और सातों विभक्तियों में जिस शब्द का रूप समान (एकसा) रहता है, किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, उसे अव्यय करते हैं । तदुक्तम्—

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु, यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

अव्ययवर्ग प्रथमस्तम्भ

अतः=इससे, अभितः=पास से, आरम्भतः=शुरू से, इतः=यहां से, एकतः=एक से, कुतः=कहां से, ततः=वहां से या उस कारण से, परितः=चारों ओर से, बाह्यतः=बाहर से, यतः=जहां से, सर्वतः=सब से, अत्र=यहां, अन्यत्र=और कहीं, अमुत्र=परभवमें, इतरत्र=अन्य समय में, एकत्र=एक जगह, कुत्र=कहां, तत्र=वहां, यत्र=जहां, यत्र तत्र=जहां तहां, सर्वत्र=सब जगह, तथा=तैसे, यथा=जैसे, सर्वथा=सब प्रकार से, अन्यथा=अन्यप्रकार से, तावत्=तितना, यावत्=जितना।

अधः=नीचे, अपि=भी; ही, अलम्=बस, अहो; चित्रम्=आश्चर्य या अजीवपन, अस्तु=हो; अच्छा या खैर, आम्=हां, उपरि=ऊपर, एव=ही, एवम्=इस प्रकार, ओं; बाढम्=हां, कथम्=कैसे, किन्तु=परन्तु, किम्=क्यों, किमर्थम्=किसलिये, क्व=कहां, चेत्=यदि; तथा=और या तैसे, धिक्=धिक्कार, न, नो=नहीं, न च=न कि, नमः=नमस्कार, नूनम्=निश्चय से, पुनः=फिर, प्रति=प्रति, प्रायः=बहुधा, पुरा=पेश्तर, मिथः; मिथो=परस्पर, मुहुः=बार बार, वरम्=अच्छा,

Scanned by CamScanner

सहसा = अकस्मात्, साधु = ठीक और शाबास, हा = धिक्कार। पश्चात् = पीछे।

समयवाचक अव्यय

अचिरात् = शीघ्र, अजस्रं; नित्यम् = लगातार, अद्य = आज, अधुना; साम्प्रतम् = अभी, अहर्दिनम् = प्रतिदिन, अहोरात्रम् = रातदिन, आशु = शीघ्र, इदानीम् = इस समय, एकदा = एक समय, कदा = कब, जातु = कभी, तदा = तब, परश्वः = परसों, प्रतिपरश्वः = नरसों, प्रातः = सबेरे, यदा = जब, श्वः = कल, सततं; सत्वरं; सर्वदा = सदा, सायम् = शाम, ह्यः = बीता कल।

नोट—इन तीनों स्तम्भों के शब्द अव्यय हैं। इनके रूप नहीं चलते।

क्रियाविशेषण का लक्षण

जो शब्द क्रिया में विशेषता बतलाता है उसे क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे—'भवान् अकारणं कुप्यति' आप अकारण नाराज होते हो। 'अहम् अवश्यं गच्छामि' मैं जरूर जाता हूँ। 'सः उत्तरोत्तरं वर्णयति' वह आगे आगे कहता है। इत्यादि। यहां अकारणम्, अवश्यम् और उत्तरोत्तरम् क्रियाविशेषण हैं। क्रियाविशेषण भी अव्यय होते हैं।

अकस्मात् = अचानक, अकारणम्; अनायासेन = सहज, अन्योन्यम् = आपस में, अवश्यम् = जरूर, इत्थम् = ऐसे, इत्थमेव = यों ही, उत्तरोत्तरम् = आगे आगे, कथम् = कैसे, कथमपि = किसी प्रकार, कदाचित् = शायद, किल = निश्चय से, तेन प्रकारेण = तैसे, दैवात् = भाग्य से, नूनम् = अवश्य ही, परस्परम् = आपस मे, बलात् = जबर्दस्ती, मन्दं मन्दम् = धीरे धीरे, यथा तथा = जैसे, तैसे। येन केन प्रकारेण = किसी भी प्रकार; वृथा; व्यर्थम् = वृथा, शनैः शनैः = क्रमशः, सत्वरम् = जल्दी, सहसा = यकायक, संयोगात् = इत्तफाकिया, स्वयम् = खुद, हठात् = जबर्दस्ती।

Scanned by CamScanner

दिवादिगणी परस्मैपदी क्रियाएँ

कुप्यति	= गुस्सा होता है,	क्रुध्यति	= नाराज होता है,
तृप्यति	= तृप्त होता है,	दृप्यति	= गर्व करता है,
नश्यति	= नष्ट होता है,	नृत्यति	= नाचता है,
पुष्यति	= पूर्ण करता है,	मुह्यति	= मोहित होता है,
शुध्यति	= साफ होता है,	शुष्यति	= सूखता है।

कुप्=गुस्सा होना, क्रुध्=नाराज होना, तृप्=तृप्त होना, दृप्=गर्व करना, नश्=नष्ट होना, नृत्=नाचना, पुष्=पूर्ण करना, मुह्=मोहित होना, शुध्=साफ होना, शुष्=सूखना।

चुरादिगणी परस्मैपदी क्रियाएँ

अर्चयति	= पूजता है,	कथयति	= कहता है,
क्षालयति	= धोता है,	गणयति	= गिनता है,
चिन्तयति	= विचारता है,	पारयति	= पूरा करता है,
चोरयति	= चुराता है,	दुखयति	= दुःख देता है,
ताडयति	= दुख देता है,	भक्षयति	= खाता है,
भूषयति	= सजाता है,	रचयति	= बनाता है,
लेपयति	= लीपता है,	सूचयति	= सूचना देता है,
सीव्यति	= सीता है,	स्पृहयति	= चाहता है।

अर्च्=पूजना, कथ्=कहना, क्षाल्=धोना, गण्=गिनना, चिन्त्=विचारना, पृ=पूरा करना, चुर्=चुराना, दुख्=दुःख देना, ताड्=ताड़ना, भक्ष्=खाना, भूष्=सजाना, रच्=बनाना, लिप्=लीपना, सूच्=सूचना देना, सिव्=सीना, स्पृह्=चाहना।

Scanned by CamScanner

तुदादिगणी परस्मैपदी क्रियाएँ

इच्छति	=	चाहता है,	क्षिपति	=	फेंकता है,
पृच्छति	=	पूँछता है,	मुञ्चति	=	छोड़ता है,
लिखति	=	लिखता है,	विन्दति	=	पाता है,
विशति	=	घुसता है,	ष्ठीवति	=	थूकता है,
सिञ्चति	=	सींचता है,	स्पृशति	=	छूता है, ।

इष् = चाहना, क्षिप् = फेकना, पृच्छ् = पूछना, मुञ्च् = छोड़ना; लिख् = लिखना, विन्द् = पाना, विश् = प्रवेश करना, ष्ठीव् = थूकना, सिञ्च् = सीचना, स्पृश् = छूना।

अनुवादसहायक नियम पंचमस्तम्भ

१४—किसी भी शब्दके अन्त में 'तः' लगा देने से 'से' अर्थ होता है। जैसे—काशीतः = काशी से, सागरतः = सागर से। इत्यादि।

१५—अभितः, परितः, अन्तरेण, प्रति, हा और धिक् शब्द के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—गृहं परितः, दीनं प्रति। कृपणं धिक्। नास्तिकं हा इत्यादि।

१६—नमः, स्वाहा, स्वस्ति, अलम्, बलि, हित और सुख शब्द, पृह् धातु, क्रोधार्थकधातु, द्रोहार्थकधातु, ईर्ष्यार्थक धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—जगदीशाय नमः। दैत्येभ्यः अलम्। भूताय बलिः। जनकाय स्पृहयति। छात्राय कुप्यति। मह्यम् अभिद्रुह्यति। इत्यादि।

१७—सहार्थक शब्दों के योग में जिसका साथ किया जाता है। द्योतक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—जनकेन सह याति। मया सार्धं याति इत्यादि।

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

किं कुर्मः वयं तत्र ? अयं कुणपः कुत्र गच्छति। भागिनेयः उपायनं नो इच्छति। पितामहाय नमः अस्तु। सः अन्तःपुरस्य आराधनाय अलम्। बालौ मन्दं मन्दं व्रजतः। कान्दविकस्य प्रतिवासः वर नास्ति। चोरं धिक् अस्तु। क्रूराः किं किं न कुर्वन्ति। वय रसायनात् एव स्वास्थ्यं विन्दामः। अध्यक्षाः धर्मं प्रति नियन्त्रणं जनयन्ति। बालाः उद्यान परितः वृक्षान् गणयन्ति स्म। पितामहः जनकाय कुप्यति। अवशाः बालाः उत्तरोत्तरं क्राम्यन्ति। किं बालं मार्गं पृच्छसि। इयं त्वयि मालां मुञ्चति। मातुलः मामकीनाय चित्राय स्पृहयति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

ब्राह्मण को नमस्कार और कंजूस को धिक्कार हो। अविचारी जन धर्म के प्रति नियन्त्रण चाहते हैं। माली बाग के चारों ओर घूमता था। बालक मेरे चित्र को चाहता है। यह नोकर मालिक की सेवा को समर्थ है। मूर्खजन हित को अहित गिनते हैं। हम दोनों यहां ईश्वर को पूजते हैं। मन्दिर में चमगादड़ फिर घुसते हैं। घोड़े घर में क्यों घुसते हैं। मोर वन में जहां तहां टहलते हैं। नीचजन धन चाहते हैं। नेवला और सर्प परस्पर शत्रु हैं। द्वारपाल, राजा के पास अकस्मात् जाता था। वह मथुरा से (मथुरातः) प्रयाग को जाता था। मूर्ख से रास्ता को क्यों पूछते हो!

Scanned by CamScanner

दशमः पाठः

इकारान्त पुल्लिङ्ग कविशब्द के रूप

प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे	हे कवी,	हे कवयः

अग्निः = आग, अतिथिः = पाहुना, अरतिः = मुट्ठी बँधा हाथ, अवधिः = मुहलत, अरिः = शत्रु, असिः = तलवार, आधिः = मनस्ताप, उदधिः = समुद्र, उपपतिः = यार, ऋषिः = साधु, कपिः = बन्दर, कलिः = कलह, कविः = कविताकार, कृमिः = छोटा कीड़ा, खाद्यविपणिः = राशन दुकान, गिरिः = पर्वत, गोपतिः = सांड़ या बैल, ग्रन्थिः = गाँठ, तित्तिरिः = तीतर।

दतिः = भिश्ती, देवर्षिः = देवऋषि, ध्वनिः = आवाज, निधिः = खजाना, नृपतिः = राजा, पाणिः = हाथ, प्रभृतिः = इत्यादि, बलिः = कर; भेंट; सिकुड़न या नजूल, भगिनीपतिः = बहनोई, मणिः = मोती, रविः = सूर्य, विधिः = ब्रह्मा; कार्य या तरीका, विपणिः = दुकान, विष्टिः = बेगार, व्याधिः = रोग, शालिः = धान, शाल्मलिः = सेमरवृक्ष, शेवधिः = खजाना, सन्धिः = मेल, सारथिः = रथवाहक, हरिः = विष्णु।

इन पुल्लिङ्ग इकारान्त शब्दोंके रूप कविशब्द के समान चलते हैं।

Scanned by CamScanner

इकारान्त पुल्लिङ्ग पतिशब्द

प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः

नोट – जब पतिशब्द किसी दूसरे शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है तब उस जुड़े हुये शब्द के रूप कवि शब्द के समान चलते हैं। जैसे–भूपतिना, नृपतेः, गोपतौ इत्यादि। इसी प्रकार उमापति, गौरीपति, रमापति, श्रीपति, सीतापति इत्यादि शब्दों के रूप जानना।

कति (कितना) शब्द—केवल बहुवचन में चलता है। और इसके रूप कति, कति, कतिभिः. कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु इस प्रकार तीनों लिङ्गों में एक समान रहते हैं। कतिशब्द के रूपोंके साथ 'चित्' शब्द लगाकर भी प्रयोग होता है। जैसे—कतिचित् आदि।

मित्रवाचक पु० सखिशब्द के रूप

प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पंचमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	सखायौ	सखायः

Scanned by CamScanner

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग मतिशब्द के रूप

प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते	हे मती	हे मतयः

अलंकृतिः = शोभा, आलिः = सखि, अंगुलिः = अंगुली, कांतिः = चमक, कुक्षिः = कूख, कृषिः = खेती, केलिः = क्रीड़ा, ख्यातिः = प्रसिद्धि, गतिः = हालत; प्रवेश या रफ्तार, गव्यूतिः = दो कोश, गालिः = गाली, चितिः = ढेर या चिनाई, छात्रवृत्तिः = बजीफा, जातिः = जाति, जीतिः = जीत, ततिः = पंक्ति, तुष्टिः = सन्तोष।

दुर्मतिः = खोटी बुद्धि, धूलिः = धूल, नतिः = नमस्कार, निष्कृतिः = बदला, नीतिः = न्याय, नीविः = धोती की गांठ, पुष्टिः = पोषण, पूर्तिः = पूर्णता, प्रकृतिः = स्वभाव या आदत, प्रणतिः = नमस्कार, प्रकृतिः = स्वभाव या आदत, प्रतिकृतिः = चित्र, प्रशस्तिः = प्रशंसा, बुद्धिः = ज्ञान, भूतिः = भस्म या वैभव, भूमिः = पृथिवी, भृतिः = भाड़ा या मजदूरी, भ्रान्तिः = भ्रम, युक्तिः = उपाय।

रतिः = अनुराग, राजिः = कतार, रात्रिः = रात, रीतिः = रिवाज, वान्तिः = वमन, वृतिः = वाड़ी, वितस्तिः = वीता, विस्मृतिः = विस्मरण या चूक, वृत्तिः = धन्धा, व्रततिः = लता, वृद्धिः = तरक्की, वृष्टिः = वर्षा, शक्तिः = बल, शांतिः = शान्ति, श्रान्तिः = थकावट, श्रुतिः = शास्त्र, सिद्धिः = सफलता, सृष्टिः = रचना, संसृतिः = संसार, स्तुतिः = स्तवन, स्मृतिः = स्मरण, स्वीकृतिः = स्वीकरण।

Scanned by CamScanner

इकारान्त नपुँसकलिङ्ग वारि (जल) शब्द के रूप

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि,वारे	वारिणी,	वारीणि

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

आर्याः अतिथिम् अर्चन्ति। कवेः कला कमनीया नास्ति। गिरौ कति ऋषयः वसन्ति। कतीनां बालानां स्मृतिः वरं नास्ति। कुल्यायाः वारिणि कीटाः सन्ति। सुधा, पत्या सह विपणिं याति। सख्युः आवेगः चित्तं दुखयति। रात्रौ लेखं के के न लिखन्ति। विधिः संसृतेः सृष्टिं करोति न वा? श्रुतिः दुर्मतिं क्षालयति। कविः भूपतेः प्रशस्तिं लिखति। इमाः रीतयः प्रकृत्या नश्यन्ति। वीणा गालीः ददाति। पाणेः शोभा दानेन एव भवति।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

वह राजा के खजाने का स्वामी है। कलह का परिणाम अच्छा नहीं होता। बुद्धि से मनुष्य की जांच होती है। शत्रु के हाथ में तलवार थी। हलवाहा राजा को कर देता है। कुए का पानी निर्दोष होता है। साधु पर्वत पर वसते हैं। वर्षा कृषि की रक्षा करती है। व्याधि से शरीर नष्ट हो जाता है। परोपकार से ख्याति होती है। ब्रह्मा संसार की रचना करता है। वहनोई बन्दर से खेलता है। मित्र का पुत्र रोता था। वीणा पति के साथ बाजार को जाती है। कक्षा में कितने छात्र पढ़ते हैं।

Scanned by CamScanner

एकादशः पाठः

उकारान्त पुल्लिङ्ग साधुशब्द के रूप

प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पंचमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधुषु
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

उकरान्त पुल्लिङ्ग शब्द

अस्रुः=आंसू, आखुः=चूहा, अंशुः=किरण, इक्षुः=ईख, इन्दुः; विधुः=चन्द्रमा, इषुः=बाण, उडुः=नक्षत्र, उरुः=जङ्घा, ऋतुः=मौसम, कमण्डलुः=कमण्डल, किष्कुः=गज, क्रतुः=यज्ञ केतुः=ध्वजा, गुरुः=शिक्षक, जन्तुः=प्राणी, जिगमिषुः=जाने का इच्छुक, तन्तुः=धागा, तरक्षुः=रीक्ष, तरुः=वृक्ष, पङ्गुः=लँगड़ा, पशुः=चौपाया।

पांसुः=धूल, प्रभुः=स्वामी, बन्धुः=भाई या मित्र, बाहुः=भुजा, भानुः=सूर्य, भिक्षुः=भिखारी, मुमूर्षुः=मरने का इच्छुक, मृत्युः=मौत, मृदुः=कोमल, राहुः=राहु, लघुः=छोटा, वायुः=हवा, विन्दुः=बून्द, शत्रुः=बैरी, शम्भुः=महादेव, शिशुः=बालक, शीतांशुः=चन्द्रमा, साधुः=ऋषि, सेतुः=पुल, हितुः=हितकारी, हिन्दुः=हिन्दू, हेतुः=कारण। इन इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप साधुशब्द के समान चलते हैं।

Scanned by CamScanner

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग तनु (शरीर) शब्द के रूप

प्रथमा	तनुः	तनू	तनवः
द्वितीया	तनुम्	तनू	तनूः
तृतीया	तन्वा	तनुभ्याम्	तनुभिः
चतुर्थी	तन्वै, तनवे	तनुभ्याम्	तनुभ्यः
पंचमी	तन्वाः तनोः	तनुभ्याम्	तनुभ्यः
षष्ठी	तन्वाः, तनोः	तन्वोः	तनूनाम्
सप्तमी	तन्वाम्, तनौ	तन्वोः	तनुषु
सम्बोधन	हे तनो	हे तनू	हे तनवः

उडुः = नक्षत्र, कुः = पृथ्वी, चञ्चुः = चोंच, धेनुः = गाय, फल्गुः = अंजीर; रज्जुः = रस्सी, रूबुः = रेडी या अंडी, रेणुः = धूल।
इन उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप तनुशब्द के समान चलते हैं।

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग वस्तुशब्द के रूप

प्रथमा	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
सम्बोधन	हे वस्तु, वस्तो	वस्तुनी	वस्तूनि
द्वितीया	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि

इसके तृतीया से सप्तमी तकके रूप वारिशब्द के समान चलते हैं।

अम्बु = जल, अस्रु = आंसू, उडु = नक्षत्र, कटु = कड़ुवा, जतु = लाख, जानु = घुटना, दारु = लकड़ी, मधु = शहद, लघु = छोटा, वस्तु = धन, श्मश्रु = मूँछ, सानु = पर्वत की समभूमि।

समयवाचक शब्द

अमावस्या = अमावस. आश्विन = कुँवार, कालः; वेला; समयः = समय, कृष्णपक्षः = कृष्णपक्ष या वदी, क्षणम् = क्षण, घटिका; घटी = घड़ी, घस्रः; दिनं; दिवसः = दिनं; ज्येष्ठः = जेठ;

Scanned by CamScanner

तिथिः = मिति, पक्षः = पक्ष, पलः = पल, प्रतिपदा = पड़वा, प्रदोषः = रात्रि का प्रारम्भ, प्रभातम् = सबेरा, प्रहरः; यामः = पहर, मध्याह्नम् = दोपहर, मार्गशीर्षः = अगहन, मासः = महीना, मुहूर्तम् = मुहूर्त, युगम् = युग, वर्षः; वत्सरः; सम्वत्सरः = वर्ष या साल, बसन्तः = बसन्त, विपलः = विपल, वेला = वेरा, शुक्ल-पक्षः = शुक्लपक्ष या सुदी, सप्ताहः = सप्ताह, हायनः = सम्वत; होरा = घण्टा। इन शब्दों के रूप यथायोग्य बाल, ज्ञान और लता शब्द के समान चलते हैं।

तुमुन्प्रत्ययान्त शब्दवर्ग

आसितुम् = बैठने को, आगन्तुम् = आने को, आह्वातुम् = बुलाने को, कर्त्तुम् = करने को, कारयितुम् = कराने को, गन्तुम् = जाने को, गमयितुम् = भिजाने को, ग्रहीतुम् = लेने को, घ्रातुम् = सूंघने को, चर्वितुम् = चबाने को, जागरितुम् = जगाने को, जीवितुम् = जीने को, जेतुम् = जीतने को, त्यक्तुम् = छोड़ने को, दर्शयितुम् = दिखाने को, दातुम् = देने को, दापयितुम् = दिलाने को, द्रष्टुम् = देखने को।

धर्तुम् = धरने को, पठितुम् = पढ़ने को, पराजेतुम् = हारने को, पाठयितुम् = पढ़ाने को, पातुम् = पीने को, प्रष्टुम् = पूंछने को, भर्तुम् = भरने को, भोक्तुम् = खाने को, मर्तुम् = मरने को, मारयितुम् = मारने को, यातुम् = जाने को, लेखितुम् = लिखने को, वक्तुम् = कहने को, वर्णितुम् = वयान करने को, विक्रेतुम् = वेचने को, विज्ञातुम् = जानने को, विधातुम् = करने को, शयितुम् = सोने को, श्रावयितुम् = सुनाने को, श्रोतुम् = सुनने को, सीवितुम् = सीने को, स्नातुम् = नहाने को, स्मर्तुम् = याद करने को, हसितुम् = हँसने को। ये सभी शब्द अव्यय होते हैं। इनके रूप नहीं चलते।

Scanned by CamScanner

त्रिलिङ्ग क्तप्रत्ययान्तशब्द

अलंकृतम् = सजाया, आत्तम् = लिया, उक्तम् = कहा, उप्तम् = बोया, उषितम् = वसा, ऊढ़म् = ढ़ोया, कथितम् = कहा, कारितम् = कराया, कीर्तितम् = सराहा, कृतम् = किया, क्रीतम् = खरीदा, क्षिप्तम् = फैंका, खातम् = खोदा, गणितम् = गिना, गतम् = गया, गीतम् = गाया, गृहीतम् = लिया, घोलितम् = घोला, घ्रातम् = सूंघा, चरितम् = किया, चर्वितम् = चबाया, चोरितम् = चुराया, छिन्नम् = काटा, जातम् = हुआ, जितम् = जीता।

ज्ञातम् = जाना, तीर्णम् = पार किया, त्यक्तम् = छोड़ा, त्रातम् = बचाया, दत्तम् = दिया, दृष्टम् = देखा, धृतम् = पकड़ा, नष्टम् = नष्ट हुआ, नीतम् = ले गया। पक्वम् = पकाया, पठितम् = पढ़ा, पतितम् = गिरा, पीतम् = पिया, पूजितम् = पूजा गया, पृष्टम् = पूंछा, बद्धम् = बांधा, बुद्धम् = जाना, भिन्नम् = छेदा, भुक्तम् = खाया, भूतम् = हुआ, भ्रष्टम् = भुना, मतम् = जाना, मर्दितम् = मला, मुक्तम् = छोड़ा।

मृतम् = मरा, युक्तम् = मिलाया, रोदितम् = रोया, लग्नम् = लगा, लब्धम् = पाया, लिखितम् = लिखा, लीढम् = चखा, वर्धितम् बढ़ाया, वृत्तम् = हो चुका, शयितम् = सोया, शुष्कम् = सूखा, शोधितम् = साफ किया, श्रुतम् = सुना, शिष्टम् = पूर्ण हुआ, सुप्तम = सोया, सोढम् = सहा, स्तुतम् = स्तवन किया, स्नातम् = नहाया, स्मृतम् = याद किया, हतम् = मारा, हसितम् = हँसा, हूतम् = बुलाया, हृतम् = चुराया।

इन शब्दों के रूप बाल, ज्ञान और लता शब्द के समान तीनों लिङ्गों में चलते हैं स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त हो जाते हैं। इनका कर्त्ता प्रायः तृतीयान्त होता है। जैसे—तेन कृतम्, मया पठितम् इत्यादि

Scanned by CamScanner

संस्कृत से हिन्दी बनाओ

प्रभुणा मणयः क्रीताः। आखवः रिपोः न्यूनाः नो भवन्ति। वायुना विपणयः पतिताः। पशोः कुक्षेः क्रमयः पतन्ति। उदधिः विन्दुभिः नो तृप्यति। भूपतेः बलिम् इच्छामि। साधवः गिरौ तरणिं पश्यन्ति। वयं गुरु वे बलि दद्मः। मृत्युना नृपतिः अपि नो त्यक्तः। बन्धुना बाहुना शत्रुः हतः। कृपणेन भिक्षवे भिक्षा न दत्ता। शिशवः पठितुं गच्छन्ति। मतुं के वाञ्छन्ति। शुक्ल-पक्षस्य प्रतिपदायां गन्तुम् इच्छामि। बन्धुना रज्वा शत्रवः बद्धाः। मनोरमायाः मतौ शिला पतिता।

हिन्दी से संस्कृत बनाओ

साधु पर्वत पर वसते हैं। मेल से सबका लाभ हुआ। इस दुकान में मोती नहीं मिलते। व्याधि ने शत्रु का अहित किया। गुरु से कलह क्यों की। साधु के आंसू अकल्याण को सूचित करते हैं। मृत्यु राजा को भी नहीं छोड़ती। बन्धु ने विष्णु की पूजा की। सैनिक वहाँ हारने को क्यों गये। राजा का लड़कपन अभी नहीं गया। ऋषि ने कमण्डलु के पानी से नहाया। बसन्त सभी ऋतुओं का राजा है। भाई की दुकान में चूहे मरे। शिशु की यह कृतज्ञता है। राजा ने वाण से शत्रु मारा। तुम सब यहाँ शोर करने को गये।

Scanned by CamScanner

* सुभाषित दशकम् *

काव्यशास्त्र – विनोदेन, कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा ॥ १ ॥

चलत्येकेन पादेन, तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् ।
नासमीक्ष्य परं स्थानं, पूर्वमायतनं त्यजेत् ॥ २ ॥

न गणस्याग्रतो गच्छेत्, सिद्धे कार्ये समं फलम् ।
यदि कार्यविपत्तिः स्यात्, मुखरस्तत्र हन्यते ॥ ३ ॥

अयं निजः परो वेति, गणना लघुचेतसाम् ।
उदार – चरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ४ ॥

न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं, न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः ।
व्यवहारेण मित्राणि, जायन्ते रिपवस्तथा ॥ ५ ॥

जीवितात्तु पराधीनाज्, जीवानां मरणं वरम् ।
मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रत्वं, वितीर्णं केन कानने ॥ ६ ॥

पापं त्यागं विवेकं च, वैभवं मानितामपि ।
कामार्ताः खलु मुञ्चन्ति, किमन्यैः स्वञ्च जीवितम् ॥ ७ ॥

यौवनं धन – सम्पत्तिः, प्रभुत्व – मविवेकिता ।
एकैकमप्य – नर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम् ॥ ८ ॥

जनयन्त्यर्जने दुःखं, तापयन्ति विपत्तिषु ।
मोहयन्ति च सम्पत्तौ, कथमर्थाः सुखावहाः ॥ ९ ॥

हस्तस्य भूषणं दानं, सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
नेत्रस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणैः किम्प्रयोजनम् ॥ १० ॥

॥ इति सरल संस्कृतशिक्षायाः प्रथमो भागः समाप्तः ॥

मुद्रक—मुन्निलाल प्रेस, दीक्षितपुरा, जबलपुर ।

Scanned by CamScanner

भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में निर्मित
विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में निर्मित नंद्यावर्त महल

978-93-84003-00-5

Scanned by CamScanner